अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष- 43, अंक- 13, 16-29 फरवरी 2020

उन्माद विकृति का और
महिला संस्कृति की प्रतीक है।
विकृति का सामना संस्कृति ही कर सकती है।

- महात्मा गांधी

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 43, अंक : 13, 16-29 फरवरी 2020

अध्यक्ष
महादेव विद्रोही

संपादक
बिमल कुमार
सहसंपादक
प्रेम प्रकाश
09453219994
संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'
प्रो. सोमनाथ रोडे अरविन्द अंजुम,
रमेश ओझा अशोक मोती

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

एक प्रति	:	05 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC Code : UBIN0538353
Union Bank of India
Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. सपादकीय...	2
2. वह जगदम्बा थीं!...	3
3. शाहीनबाग : औरतों की रहनुमाई में...	4
4. शाहीनबाग और जामिया वाला कांड...	6
5. नागरिकता संशोधन कानून 2019 में...	7
6. बजट-2020 : नौजवानों के भविष्य को...	8
7. दुनिया के मुकाबले बदहाल है भारत..	10
8. अध्यक्ष की कलम से...	11
9. गांधी : एक ऐसी प्रतिध्वनि, जो आज भी...	12
10. गांधीजी के बारे में प्रचलित भ्रांतियां...	14
11. उपन्यास : 'बा'...	15
12. लोक-विमर्श...	17
13. गतिविधियां एवं समाचार...	18
14. कविताएं...	20

संपादकीय

स्त्री, मानवीय गुणों के प्रकटीकरण का माध्यम

जब एक ज्योति दूसरी ज्योति से मिलती है, तो दोनों मिलकर एक बड़ी ज्योति हो जाती हैं। जिस बड़ी ज्योति को हम बापू के नाम से जानते हैं, उसमें बा की ज्योति शामिल है। बा में मानवीय गुणों का संपूर्ण प्रकटीकरण है। वे गुण जब आदर्श के साथ मिले तो बा-बापू का निर्माण हुआ। बा स्त्री शक्ति का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि स्त्री में संपूर्ण मानवीय गुणों की प्रतीक हैं।

स्त्री के माध्यम से संपूर्ण मानवीय गुणों का प्रकटीकरण हो, तभी नयी समाज रचना का आधार बन सकेगा। स्त्री मुक्ति का आंदोलन, समस्त मानव जाति की मुक्ति का आंदोलन बने। स्त्री के मन में जो समस्त प्राणियों व प्रकृति के प्रेम का गुण है, वह प्रकृति संरक्षण व जीव संरक्षण तथा अंततः पर्यावरण संरक्षण का माध्यम बने, तभी नव सृजन होगा। वे समस्त समूह एवं इकाइयां, जो दोहन व शोषण का शिकार हैं, उनकी मुक्ति का मार्ग स्त्री की मानवीय गुणों वाली शक्ति की वैश्विक चेतना के माध्यम से ही संभव होगा।

अहिंसक समाज के लिए जिन गुणों की आवश्यकता है, वे हैं प्रेम, करुणा, सेवा, त्याग व कष्ट सहन की क्षमता। हिंसा, आक्रामकता और अन्य पर शासन चलाने व अन्य को अधीन करने की प्रवृत्ति का निषेध करना है, तो इन गुणों को प्रतिष्ठित करना होगा। राजसत्ता द्वारा हिंसा, आक्रामकता एवं दमन को औचित्य प्रदान करने के तरह-तरह के तर्क प्रस्तुत किये जाते रहे हैं। लेकिन राजसत्ता का मूल गुण, लोकसत्ता का अपहरण रहा है तथा लोकसत्ता के अपहरण के लिए लोक में विभिन्न आधारों पर विभाजन करने का षडयंत्र चलता रहा है। ये सब झूठ और नफरत की बुनियाद पर किया जाता रहा है। ऐसे में स्त्री की मानवीय गुणों वाली शक्ति को लोकसत्ता के निर्माण के काम में लगना होगा तथा लोक को विभाजित करने वाले झूठ व नफरत के विकल्प में प्रेम, करुणा, सेवा, त्याग आदि के माध्यम से लोक की एकता के निर्माण के मार्ग को प्रशस्त करना होगा।

एक झूठ फैलाया गया है कि स्त्री को स्त्री के सवालों पर, दलित को दलित के सवालों पर, तथा इसी प्रकार प्रत्येक 'निर्मित पहचान' को अपनी पहचान के हक के लिए लड़ना चाहिए, जबकि सच्चाई यह है कि अलग पहचान का निर्माण ही, अलग-अलग तरह से शोषण करने के लिए हुआ है। अगर हम यह देख लेंगे कि अलग-अलग शोषण-दोहन करने वाली शक्तियां, एक व्यापक एकीकृत शक्ति के विभिन्न रूप हैं, तो उनके खिलाफ लड़ाई भी लोक की एकीकृत शक्ति के निर्माण की रणनीति द्वारा बढ़ा सकेंगे।

लोक की एकीकृत शक्ति के निर्माण में स्त्री शक्ति की बड़ी भूमिका होगी। आज संविधान बचाने तथा एकीकृत नागरिकता के सवाल पर स्त्री के माध्यम से संपूर्ण मानवीय एवं संपूर्ण नागरिकता के गुणों का प्रकटीकरण हो रहा है, तो राजसत्ता में इसकी प्रतिक्रिया स्पष्ट दिख रही है। इसे एक विशेष समुदाय द्वारा प्रेरित या एक विशेष विचार से प्रेरित बताने का झूठा अभियान चलाया जा रहा है। भारतीय नागरिकता किसी भी तरह पाकिस्तानी नागरिकता या बांग्लादेशी नागरिकता की प्रतिक्रिया में नहीं है। स्त्रियों के माध्यम से प्रकट हो रही मानवीय एवं नागरिक शक्ति को तोड़ने के लिए इस झूठ का सहारा लिया जा रहा है। बाहर से आने वाले शरणार्थियों को या भारत में रहने वाले नागरिकों को—दोनों को धर्म या किसी अन्य पहचान के आधार पर विभाजित करना, लोकशक्ति को विभाजित करने के एक व्यापक षड्यंत्र का हिस्सा है।

स्त्री के माध्यम से संपूर्ण मानवीय गुणों के प्रकटीकरण से ही हम लोक के स्वराज्य की ओर बढ़ सकेंगे। क्योंकि जब लोक की सत्ता का अपहरण होता है, तो सबसे पहले स्त्री, उसका शिकार होती है। स्त्री के प्रेम, करुणा, सेवा, त्याग आदि गुणों का गुणगान तो किया जाता है, किन्तु इन्हें संगठित हिंसा की सत्ता के अंतर्गत नियंत्रित व अनुशासित किया जाने लगता है। प्रेम, करुणा आदि गुण स्वायत्त नहीं होंगे, तो गुलामी का आभूषण बनकर रह जायेंगे। इसीलिए इन गुणों का उपयोग हिंसा एवं नियंत्रण करने वाली शक्तियों का निषेध करने के लिए होना चाहिए। तभी लोक के स्तर पर ये स्वायत्त शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो सकेंगे तथा लोक के स्वराज्य की स्थापना का माध्यम बन सकेंगे।

इन परिवर्तनों की सबसे अधिक संभावना उन क्षेत्रों में है, जहां स्त्री और पुरुष मिलकर, सहभागिता के साथ श्रम करते हैं तथा श्रम के लाभ का बराबरी से बंटवारा करते हैं। वे क्षेत्र हमारे सघन क्षेत्र बन सकते हैं, लोक स्वराज्य के प्रयोग क्षेत्र बन सकते हैं।

—बिमल कुमार

वह जगदम्बा थीं!

❑ **बाबूराव जोशी**

कस्तूरबा के संबंध में संक्षेप में कुछ कह पाना दुष्कर है और यह उनके प्रति न्याय भी न होगा। उनके लिए यह कह देना कि वह सीता, सावित्री, अरुन्धती अथवा यशोधरा के सदृश थीं, अपर्याप्त है। हम केवल यह भी नहीं कह सकते कि वह रामकृष्ण परमहंस की पत्नी शारदामणि के सदृश थीं। इतिहास भले स्वयं को दोहराता हो, किन्तु व्यक्ति फिर से नहीं दोहराये जाते। कस्तूरबा कई कारणों से अद्वितीय थीं और उनका जीवन गांधीजी के असाधारण जीवन के लिए कई अर्थों में महत्त्वपूर्ण था, जिसके कारण वह महात्मा बन सके। **–सं.**

एक दिन सायंकालीन प्रार्थना के बाद बापू ने बड़ी गंभीरता से कहा— ''बा ने आश्रम के लिए प्राप्त धनराशि, जो बारह या पंद्रह रुपये थी, आश्रम में न जमा करके स्वयं ही खर्च कर दी। इस प्रकार उन्होंने अस्तेय-व्रत को भंग किया है।'' सीधे सादे शब्दों में उनके कहने का आशय यह था कि 'बा ने चोरी की है।' प्रार्थना में 100 से अधिक व्यक्ति उपस्थित थे। बा भी उपस्थित थीं। बापू का बा के संबंध में ऐसा कहना किसी को भी अच्छा नहीं लगा। क्योंकि बा ने खर्च किये, मतलब आश्रम के लिए ही खर्च किये। पर बा कुछ बोलीं नहीं। वे बिलकुल शांत रहीं।

उस दिन बंबई की एक विदुषी महिला मेहमान बनकर आश्रम में आयी थीं। प्रार्थना के समय वे भी उपस्थित थीं। उन्हें यह बात बहुत चुभी। उस समय तो वे कुछ नहीं बोलीं। बंबई पहुंचकर उन्होंने बा को एक पत्र लिखा—''मुझे आपसे बहुत सहानुभूति है। आपको कितना सहन करना पड़ता है? सत्य-अहिंसा के गीत गाने वाले बापू आपके संबंध में ऐसे उद्‍गार प्रकट करें। उन्होंने जीवन भर आपको बहुत कष्ट दिया है। खाने-पीने और कपड़े-लत्ते जैसी साधारण बातों के लिए भी इतनी सख्ती।''

बा ने पत्र पढ़ा और उसका उत्तर लिखा— ''आपसे मेरा परिचय नहीं है। हम कभी एक-दूसरे से मिली भी नहीं। हमने कभी एक-दूसरे से अपने सुख-दुख की बात नहीं की। फिर आपसे किसने कहा कि मैं बहुत दुखी हूं? यह सौभाग्य की बात है कि मुझे 'बापू' जैसे पति मिले हैं। उनके कारण मुझे संसार में सम्मान भी कम नहीं मिला है। मुझसे भूल हुई और उन्होंने उसे बता दिया तो इसमें विशेष बात क्या हुई? हर घर में ऐसा ही होता है। परंतु इनका स्वभाव दूसरे लोगों से कुछ भिन्न है। हमारी यह गृहस्थी भी कुछ ऐसी ही है कि जो कुछ होता है, वह दस आदमियों के सामने ही होता है। क्या हर घर में ऐसा नहीं होता?''

अब जीवन का संध्याकाल आ पहुंचा था। बा की आंखें उस दूसरे किनारे पर जा लगी थीं। उसी समय सन् 1942 का प्रसिद्ध 'भारत छोड़ो' आंदोलन प्रारंभ हुआ। व्यूह-रचना के पूर्व ही बापू गिरफ्तार कर लिये गये। उन्हें यह भी मालूम नहीं हो सका कि दूसरे किन-किन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। बा के लिए भी वारंट था। उसमें लिखा था कि बा की इच्छा हो, तो बापू के साथ रहें और इच्छा हो तो बाहर रहें। सरकार की दृष्टि में गांधीजी की पत्नी के अतिरिक्त उनका दूसरा महत्त्व ही क्या था? उनका जेल में रहना क्या और आश्रम में रहना क्या? दोनों एक ही बात थी।

सदा की भांति बा ने बापू से ही पूछा : ''मैं क्या करूं?''

''तू बाहर ही रह। आज संध्या समय एक आम सभा है। मेरी ओर से उसमें शामिल होना।'' बापू ने कहा।

स्वतंत्रता के आंदोलन में छाया की भांति बापू के साथ रहने वाली बा दस-बारह हजार स्त्रियों को जगा सकती थीं। वह हजारों किसानों के घर पहुंचकर अलख जगा सकती थीं। जेल-यात्रा तो प्रतिदिन की बात थी। ब्रिटिश सरकार को बा की इस शक्ति का कहां पता था? लेकिन बापू को तो उसका पता था। इसीलिए तो स्वतंत्रता-संग्राम के 'करो या मरो' के कठिन प्रसंग पर उन्होंने कहा था : ''तू मेरी ओर से जा।'' किन्तु सरकार ने बा को जाने नहीं दिया। उसने उन्हें बापू के पास आगाखां महल में ही पहुंचा दिया।

बा का स्वास्थ्य निरंतर गिरता जा रहा था। उन्हें यमराज देहरी पर आकर बैठा हुआ दिखायी दे रहा था। लेकिन यमराज की चिन्ता से अलग उनकी नजर किसी और को खोज रही थी। वह बापू पर शुभ कामनाओं की वर्षा कर रही थीं।

एक दिन उन्होंने मनु से अपनी पेटी मंगवायी। वह टीन की एक छोटी-सी पेटी थी। उसकी सांकल टूटी हुई थी। उसमें उनकी दो साड़ियां थीं। वे दोनों ही खादी की थीं। दोनों ही बापू के हाथ से कते हुए सूत की थीं। बस, यही बा की सम्पत्ति थी, इतना ही उनका परिग्रह था। ''मनूड़ी, मेरे मर जाने पर इसमें से एक साड़ी मुझे पहना देना और दूसरी साड़ी...'' रोग से जर्जर बनी हुई बा अपनी लाखों रुपये की सम्पत्ति को बांट रही थीं। मनु बड़े ध्यान से सुनने लगी। वह बड़ी उत्सकुता से यह जानने की प्रतीक्षा कर रही थी कि दूसरी साड़ी किसको दी जायेगी। बहुओं, नाती, पोती, रिश्तेदार इनकी कोई कमी नहीं थी।

''...वह लक्ष्मी को देना। लड़की को ही उसको पाने का अधिकार है।'' बा अपने व्रत का उद्यापन कर रही थीं। यह लक्ष्मी साबरमती-आश्रम के उस हरिजन-परिवार की बालिका थी, जिसे बापू आश्रम में ले आये थे। बा ने उसे अपनी पुत्री ही मानकर उसका पालन-पोषण किया था। अंत समय में अवर्ण-सवर्ण का भेद भी उनकी दृष्टि से ओझल हो गया था।

अंत समय निकट आया जानकर, सरकार ने बाहर रहने वाले रिश्तेदारों को अंदर आने की इजाजत दे दी। इस अवसर पर जो-जो लोग आये, वे उन सबसे प्रसन्न होकर बोलती रहीं। कुछ लोगों से उन्होंने कहा, ''ये मानते नहीं हैं। लेकिन मुझ जैसी बूढ़ी स्त्री की मौत तो एक उत्सव ही है। मेरे मरने पर तो लड्डुओं का बड़ा-सा भोज होना चाहिए। लेकिन यह इनको पसंद आये तब न! न खुद लड्डू खाते हैं, न दूसरे को ही खिलाते हैं।'' बा को अपनी मृत्यु स्वयं अपनी आंखों से दिखायी दे रही थी और वे उसे देखकर ही स्वयंस्फूर्त होकर बातें कर रही थीं।

ठीक शिवरात्रि के पवित्र दिन वे चल बसीं। बापू की गोद में उनका सिर था और वे बड़ी शांति के साथ स्वर्ग सिधारती हुई धन्य हो रही थीं। संध्या समय थोड़े से रिश्तेदारों और स्नेहियों की उपस्थिति में दाह-संस्कार हुआ। एक वृक्ष के नीचे तुलसी क्यारे के पास चिता रची गयी। राम-धुन गायी जा रही थी। खोये-खोये-से बापू भारी मन से उठे। वे तुलसी क्यारे के पास आये। उन्होंने तुलसी क्यारे और चिता पर फूल चढ़ाये और उनकी प्रदक्षिणा करके प्रणाम किया। देखते-ही-देखते चिता धू-धू करके जल उठी। बा का पार्थिव शरीर पंचतत्त्व में विलीन हो गया।

दूसरे दिन कुछ स्वजन अस्थियां चुनने गये। बापू जब-तब जिन कांच की चूड़ियों को पहनने के लिए मना करते रहते थे, वे ही चूड़ियां अस्थियां चुनते समय सही-सलामत मिलीं। चिता की धू-धू करती हुई आग शरीर को राख करके भी चूड़ियों को भस्म नहीं कर पायी। बा प्रायः कहा करती थीं—''मैं मरने पर भी इन चूड़ियों को नहीं निकालूंगी।'' मरने तक तो उन्होंने इन सौभाग्य-चिह्नों को नहीं ही निकाला, लेकिन उनकी आस्था और सतीत्व ने उन्हें आग में भी नहीं जलने दिया।

बा की मृत्यु पर बापू ने कहा था—''बा का जबर्दस्त गुण था, सहज ही मुझमें समा जाना। मैं नहीं जानता था कि यह गुण उनमें छिपा हुआ है। लेकिन जैसे-जैसे मेरा सार्वजनिक जीवन उज्ज्वल बनता गया, वैसे-वैसे बा खिलती गयीं और पुख्ता विचारों के साथ मुझमें यानी मेरे काम में समाती गयीं।

वह जगदम्बा थीं।'' ❑

शाहीनबाग

औरतों की रहनुमाई में...

❑ रवि रॉय

विगत 15 दिसंबर को जामिया मिलिया इस्लामिया यूनीवर्सिटी में पुलिसिया जुल्म के खिलाफ लगी आग से दक्षिणी दिल्ली सुलगनी शुरू हुई। शांत पड़ी यमुना के किनारे बसे कालिन्दी कुंज से लगायत ओखला, जसोला, शाहीनबाग, सरिता विहार, सुखदेव विहार तक का इलाका रातों-रात सुलगने लगा। यमुना का पानी खौल उठा और देखते ही देखते जसोला विहार के शाहीनबाग इलाके में चारों तरफ से लोग आकर इकट्ठा होने लगे। जसोला विहार शाहीनबाग दिल्ली मेट्रो की मैजेंटा लाइन का स्टेशन है। इस रूट पर मेट्रो के कुल 24 स्टेशन हैं। मेट्रो के ही समानांतर एक मुख्य सड़क मार्ग भी है, जो नोयडा को दिल्ली से जोड़ता है। चालीस फुटा रोड के नाम से मशहूर करीब 500 फीट रोड के इस टुकड़े पर भीड़ जमा हो गई। इस जगह से होकर गुजरने वाली ट्रैफिक में दोनों छोरों पर कई किलोमीटर लंबा जाम लग गया। बढ़ती भीड़ के दबाव से पुलिस के हाथ पांव फूलने लगे। जामिया में हुई हिंसा में काफी बदनामी बटोर चुकी दिल्ली पुलिस की हिम्मत जवाब दे गई। इसी बीच जामिया और जेएनयू के प्रदर्शनकारी छात्रों का जत्था भी शाहीनबाग पहुंच गया। भाषण, नारे और जनगीतों का सिलसिला शुरू हो गया।

शाहीनबाग धरना-स्थल पर काफी विशाल मंच बनाया गया है, जहां तमाम महापुरुषों के फोटो लगे हुए हैं। सामने करीब सौ मीटर ज़मीन पर दरी व चादरें बिछी हैं। कड़कड़ाती ठंड रोकने के लिए तंबू कनात तो हैं, पर सर्दी से बचने का और कोई खास इंतजाम नहीं है। छोटे छोटे बच्चों के साथ हज़ारों की संख्या में महिलाएं इसी आधे अधूरे इंतज़ाम में पूरे मनोयोग से बैठी हुई हैं। तमाम रचनात्मक नारों के साथ बहुत प्रमुखता से बैनर लगा कर घोषित किया गया है कि इस धरने के लिए किसी तरह की मदद, चंदा या दान स्वीकार नहीं किया जाएगा। नगद, ऑन लाइन या पेटीएम किसी भी तरीके से कोई चंदा मत दें। टेंट के भीतर सिर्फ महिलाओं या फिर वक्ताओं को ही आने की इजाज़त है। मीडियाकर्मी आयोजकों से बात करके ही अंदर आते हैं। टेंट के बाहर किसी को भी पत्रकारों से बात करना मना है। टेंट के चारों ओर रस्सियां लगाकर हदबंदी की गई है। पुरुषों का इस हद से पार जाना मना है। यदि कोई भूले भटके चला भी जाता है तो उसे बड़ी शराफत, सलीके से समझाकर बाहर कर दिया जाता है। रस्सियों के पार खड़े होकर तमाम पुरुष मंच पर चल रहे कार्यक्रम देख व सुन रहे हैं। बाहरी सड़क पर एक लाइब्रेरी है, जिसमें किताबें लगी हैं। लोग बैठकर किताब पढ़ रहे हैं। सड़क की जमीन पर तमाम कलाकारियाँ की गई हैं, जिनमें राजनीतिक मुद्दों को उकेरा गया है। सामने एक फुटओवर ब्रिज है, जो पोस्टर बैनर से पटा हुआ है। वहीं पर करीब पचास फुट ऊंचा भारत का एक नक्शा बनाया गया है। रात में जब इस नक्शे पर लगे बल्ब रौशन होते हैं, तो काफी दूर से सिर उठाए हिन्दुस्तान अपने लोकतंत्र के गौरव का जश्न मनाता दिप दिप दमकता-सा लगता है।

इस हिन्दुस्तान को शाहीनबाग की जिन औरतों ने बड़े गुरूर से सीने पर उठा रखा है, उन्हें पांच-पांच सौ रुपये और एक-एक प्लेट बिरयानी पर धंधा करने वाली बताया गया है। उन्हें नासमझ, जाहिल और बहकावे में आकर यहां बैठने वाली कहा गया है। शाज़िया बानो, जिसके चार महीने के बच्चे की इस दौरान ठंड लगने से मृत्यु हो गई, बाटला हाउस की रहने वाली है। शुरुआत से ही शाज़िया और उसका पति आरिफ़ अपने बच्चे मोहम्मद जहान के साथ रोज़ यहां आ रहे थे। चार महीने का मासूम जहान औरतों का चहेता बन गया था। जनवरी के आखिरी दिनों में बच्चे को ठंड लग गई और 31 जनवरी की रात वह चल बसा। शाज़िया का तो मानो जहान ही लुट गया, पर उसने खुद को संभाला। बच्चे को सुपुर्द ए खाक करने के बाद उसने यही कहा कि मेरे बच्चे ने इस आंदोलन के लिए अपनी शहादत दी है। ऐसा जुनून घर कर चुका है इनमें कि अब ये किसी भी दमन का सामना करने को ठान चुकी हैं। इनकी ताकत है, इनकी अहिंसात्मक सोच और उस पर अड़े रहने का अडिग संकल्प।

यह पूरा का पूरा आंदोलन इन्हीं औरतों की रहनुमाई, सरपरस्ती और देख रेख में जारी है। सात परदे में ढाँक तोप कर रखी गयीं ये औरतें खुद ब खुद सारी बंदिशें तोड़ कर बाहर निकल आई हैं। जो भी इन्हें काननू समझाने आता है, ये बस इतना ही बोलती हैं कि संसद में कानून वापसी का प्रस्ताव पास करो। खोखली लफ्फाजी वाली बातें अब और नहीं चलेंगी। असल में सारे बवाल की जड़ देश के गृहमंत्री का संसद में क्रोनोलॉजी समझाने वाला बयान और दिल्ली के रामलीला मैदान में दिया प्रधानमंत्री का भाषण है, जिसमें परस्पर विरोधाभास है। गृहमंत्री छाती ठोंक कर कह गए कि अब इस फैसले से एक इंच पीछे नहीं हटेंगे, जबकि प्रधानमंत्री का कहना है कि कोई फैसला तो अभी हुआ ही नहीं है।

शाहीनबाग में दिन भर में कई बार संविधान की प्रस्तावना का समूह-पाठ किया जाता है। माइक पर वक्ता के पीछे दोहराते हुए यह पाठ हर बार शाहीनबाग में जैसे एक नई ऊर्जा और संकल्प प्रवाहित कर देता है। सीएए, एनआरसी और एनपीआर यहां किसी को भी ठीक से नहीं पता, पर ये बात सभी को ठीक से पता है कि देश के कानून को चलाने वाली बाबा साहेब अंबेडकर की लिखी संविधान की किताब में सरकार छेड़छाड़ करने जा रही है। सांसद मनोज झा ने धन्यवाद प्रस्ताव पर राज्य सभा मे बिल्कुल ठीक कहा कि शाहीनबाग जैसा स्वतःस्फूर्त आंदोलन पहले कभी नहीं देखा गया। चालीस फुटा रोड का यह इलाका ब्रांडेड प्रोडक्ट का मुख्य बाजार है। पुरुष व महिला परिधान, इलेक्ट्रॉनिक्स, मोबाइल, फर्नीचर, क्रॉकरी, ग्रॉसरी, फुटवियर, फास्टफूड, होटल, रेस्टोरेंट आदि के साथ ही आधुनिक फैशन के तमाम प्रोडक्ट्स की बड़ी-बड़ी दूकानें यहां हैं। धरने वाले दिन से ही ये

सभी दूकानें पूरी तरह बंद हैं। दूकानदारों को नकुसान हो रहा है, पर इनके मकान मालिकों ने यह घोषित किया है कि बंदी की अवधि का किराया दूकानदारों से नहीं लिया जाएगा।

देर रात तक वहां रुकने के बाद जब मैंने घर लौटने के बारे में सोचा तो पता चला कि मेट्रो सेवा का वक्त निकल चुका है। खाने की कोई व्यवस्था थी नहीं। वहीं गली के कोने पर चाय का एक ठेला लगा था। मैंने कहा कि लाओ भाई चाय ही पिलाओ। बगल में एक अधेड़ से मौलाना खड़े थे। मेरी बात सुन कर बोले कि आप यहीं रुकिए, मैं अभी आता हूं। वे दस मिनट में एक लड़के के साथ लौटे।

''ये शादाब है, आपको ले जाएगा। हमारे घर का बना खा लेंगे न?''

मैं असमंजस में पड़ गया, जान न पहचान। सीधे खाना खाने कैसे चला जाऊं?

'रहने दीजिए, क्यों तकलीफ कर रहे हैं, रात भर की ही तो बात है। सबेरे मेट्रो शुरू होते ही घर निकल जाऊंगा।'

'ज़नाब तकल्लुफ मत करिए। जाड़े की रात है। भूखे पेट तबियत खराब कर लेंगे आप। चार कदम पर हमारा गरीबखाना है। कुछ नहीं तो दो सूखी रोटियां और सालन ही सही, नोश फ़रमा लीजियेगा। हम गरीब हैं, पर हम भी आपकी तरह ही मेहमान को देवता मानते हैं। जैसे आप कहते हैं न, अतिथि देवो भवः।' मैं लाजवाब सा उस लड़के के साथ चल पड़ा। तमाम रास्तों के चक्कर लगाता शादाब जिस मकान पर रुका, वहां बाहर दरवाजे पर रस्सी से झूलता पुरानी चादर का पर्दा टंगा था। शादाब मुझे अंदर ले गया। अंदर के कमरे में वह थोड़ी देर बर्तन खड़खड़ाता रहा। लौटा तो एक प्लेट में चार रोटियां, आलू मटर की सूखी सब्जी, प्याज, नींबू, हरी मिर्च और एक गिलास पानी मेज पर लगा दिया। मैं अंदर से हाथ धोकर बाहरी कमरे में आया, तो देखा कि एक खातून शादाब को फुसफुसाते हुए डाँट रही थीं। मुझे बाहर निकलता देख, उन्होंने मेज पर लगी प्लेट उठाई और भीतर चली गयी। शादाब खिसियानी सी हंसी के साथ बोला, आप थोड़ा बैठिये, अम्मी ताज़ी रोटियां बनाने गई हैं। बिगड़ रही थीं कि मैंनें बासी खाना क्यों परोस दिया।

'अरे यार, अपने घर में भी मैं कई बार बासी खाना खा लेता हूं।'

अंदर से हंसी के साथ शादाब की अम्मी की आवाज आई, अपने घर बासी खा लीजियेगा, यहां तो ताज़ा ही मिलेगा।'

बहरहाल दस मिनट से भी कम वक्त में ताजी रोटियों के साथ प्लेट वापस आ गई। ताजी रोटियां आती गई, मैं बेध्यानी में खाता गया। हाथ मुंह धोकर जब उठा, तो शादाब की अम्मी कमरे में आ गयीं और बोलीं, 'भइया, आज तो मैं सुबह ही पूरा खाना बना कर रख गई थी। शादाब के अब्बू दोपहर में घर आने के बजाय चालीस फुटे पर ही बिरयानी खाकर रह गए। रात में आना होता नहीं। पर अब मेहमान को तो बासी नहीं न खिला सकते।'

'तो आजकल आप लोगों का बनाने खाने का सिलसिला काफी गड़बड़ चल रहा है?'

'नहीं ऐसा कुछ नहीं है, जाड़े के दिनों में दो दिन तक तो आराम से खाना रख सकते हैं। फेकेंगे तो है नहीं।'

'सबके घर यही हाल है?'

'हां भइया, अक्सर हम लोग वहीं रह जाते हैं। कभी कभी वहां कमी भी हो जाती है। लेकिन किसी तरह काम चला लेते हैं। हमारा असली काम है धरना, जो हर हालत में, हर कीमत पर जारी रहेगा।'

'आखिर इस धरने का अंत कब होगा?'

'जब तक सीएए काननू वापस नहीं लिया जाता।'

'मगर इस काननू से दिक्कत क्या है?'

दिक्कत इस काननू से नहीं, बल्कि इसके बाद आने वाले एनआरसी और एनपीआर से है।'

'पर वो तो अभी आया नहीं?'

'भइया, आपने सुना नहीं? गृहमंत्री तो पार्लियामेंट में बोले, अभी लखनऊ में भी बोल चुके। अब भी कोई भरम है?'

'लेकिन प्रधानमंत्री तो रामलीला मैदान में इसे गलत बता चुके हैं!'

'तो भइया आप ही बताओ, कौन सही है? पार्लियामेंट में होम मिनिस्टर की कही मानें कि पब्लिक मीटिंग में प्रधानमंत्री की बात?'

'हां, ये तो बात है!'

'चलें अब हम भइया? शादाब, अंकल जी को लेकर आना।'

शादाब अंदर के कमरे में गया तो मैंने चौकी के तकिये के नीचे दो सौ का एक नोट रख दिया। पता नहीं कैसे शादाब भांप गया और नोट निकाल कर बोला, 'अंकल, इसे वापस रख लीजिए। अब्बू अम्मी बहुत डांटेंगे मुझे।'

'अरे तुम्हीं रख लो न। घर में खर्च कर लेना।'

'नहीं अंकल, ये हराम है, मैं नहीं रखूंगा।'

रात की कड़कड़ाती ठंडक में भी धरनास्थल पर लाख से ऊपर की भीड़ जमा हो चुकी थी। दूर तक महिलाओं की रंग-बिरंगी साड़ियों, दुपट्टों, काले हिज़ाब से पटा हुआ जनसमुद्र सा ठाठें मारता इलाका यमुना को तरंगित कर रहा था। किनारे पुरुषों की भीड़ में बच्चे, बूढ़े, नौजवानों के बीच नीले और केसरिया पग्गड़ वाले सिक्खों का हुजूम अलग छटा बिखेरे हुए था। इस समूह में कोई हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई नहीं, सब के सब हिन्दुस्तानी थे। बांस के खंभे पर तार लटकाकर दूर तक माइक वाले भोंपू लग गए थे। ठीक बारह बजे पूरे जन समूह ने एक साथ खड़े होकर मंच के वक्ता के साथ बोलना शुरू किया, 'हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए...।'

अगली सुबह छब्बीस जनवरी का झंडा फहराने के लिए रोहित वेमुला की मां राधिका वेमुला के इंतज़ार में काफी वक्त निकल गया पर बढ़ते वक्त के साथ भीड़ बढ़ती ही गई। अस्सी फीट की ऊंचाई पर 45 फीट लंबा तिरंगा करीब दस बजे राधिका वेमुला के साथ जेएनयू के लापता छात्र नजीब की मां और शाहीन बाग की 91 साल की दबंग दादी ने एक साथ रस्सी खींच कर फहराया। भीड़ लाखों में थी। कहा तो गया था कि दस लाख का रिकार्ड बनेगा, पर मैं इसका सही आकलन नहीं कर सकता।

करीब बारह बजे मेट्रो में वापस जाते हुए लग रहा था मैं सिर्फ अपना शरीर साथ ले जा रहा हूं। मेरा दिल, दिमाग, आत्मा सब कुछ शाहीनबाग में ही छूट गया है। वहां के नारे, आत्माभिमानी महिलाओं के बागी तेवर, मंच पर लगी तस्वीरों से लगायत क्रांतिकारी लाइनों के बैनर, पोस्टर और इनके बीच गर्वोन्नत हिन्दुस्तान का चमचमाता बाहें फैलाए खड़ा खाका आंखों के सामने से हटता ही नहीं है। ❑

शाहीनबाग और जामिया वाला कांड
(आंखों देखी रिपोर्ट)

❑ राममोहन राय

पिछले दिनों जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय तथा अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के छात्रों एवम स्टाफ पर पुलिस ने उनके कैंपस में घुस कर जिस बेरहमी से मारा, उसने अंग्रेज़ी बर्बरता की याद ताजा कर दी। प्रतिकार के लिए आज गांधी तो हमारे साथ नहीं हैं, परन्तु उनका विचार रक्षक बन कर आगे आया, जिसको उन्होंने स्वयं अंगीकृत कर निश्चय किया कि वे इसका मुकाबला अहिंसा से करेंगे, यानी यदि कोई उन पर हिंसा करेगा तो वे उसे शालीनता से सहन करेंगे परन्तु न तो झुकेंगे ,न पलायन करेंगे और न ही हार मानेंगे।

क्या यह अजब इत्तिफाक नहीं है कि गुरु नानक देव के जन्म के 550 वें वर्ष, बा-बापू जयंती के 150 वें वर्ष तथा अमृतसर के जलियां वाले बाग़ नरसंहार के शताब्दी वर्ष में उसको जनता व सरकार अपने-अपने ढंग से मना रहे हैं? गुरू नानक, जो हिन्दुओं के गुरु और मुसलमान के पीर थे, जिन्होंने समूची मानवता को एकता का संदेश दिया, उन बाबा नानक को हिन्दू-मुस्लिम एकता को तोड़ने वाले नागरिकता संशोधन एक्ट और एनआरसी के जरिये क्या श्रद्धांजलि दी जा सकती है? सरकार की यह श्रद्धांजलि और इसके मुकाबले में जनता की पहल देखिए, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा व क्षेत्र की तमाम दीवारें तोड़ कर लोग उठ खड़े हुए और इसे नकार दिया।

इसका नमूना देखने के लिये आपको जामिया मिलिया और शाहीनबाग़ जरूर आना चाहिए, जहाँ जनता इकट्ठी है। यहां पूरे दिन सर्वधर्म प्रार्थना चलती है, शांति एवम प्रेम के गीत गाये जाते हैं, इस घुप्प अंधेरे में भी हर रोज मोहब्बत की शमाँ जलाई जाती है और साथ-साथ सिख भाइयों का अटूट लंगर भी चलता है। यह आंदोलन स्वतः स्फूर्त है, जिसमें किसी विचारधारा, राजनीतिक पार्टी अथवा व्यक्ति विशेष का नेतृत्व नहीं है। क्या यही नहीं है गुरुग्रन्थ साहेब की वाणी—आपे गुरु-आपे चेला का संयोग?

जामिया मिलिया व शाहीनबाग़ में गांधी विचार को आप हर जगह पाएंगे। यूनिवर्सिटी के गेट न0 7 के बाहर पिछले 50 दिन से भी ज्यादा समय से विद्यार्थी व अन्य लोग शांतिपूर्ण धरने पर बैठे हैं। हर रोज सात युवक-युवतियां स्टेज के नीचे ही क्रमशः उपवास पर बैठते हैं। कार्यक्रम चलते हुए मैने पाया कि इस सत्याग्रह में चर्खा तो नहीं चल रहा, परन्तु गांधी साहित्य खूब पढ़ा जा रहा है। मैंने देखा कि अनेक युवा अपने हाथों में गांधी और जामिया, हिन्द स्वराज और सत्य के प्रयोग लिये हुए है और मौन बैठकर उसे पढ़ रहे हैं। यही पुस्तकें ही तो हैं, उनकी प्रेरणा व मार्गदर्शक।

प्रदर्शनकारी युवाओं के आदर्श व प्रेरणा सिर्फ और सिर्फ गांधी ही है। बातचीत के दौरान वे सन 1905 में साउथ अफ्रीका की उस घटना की याद दिलाते हैं, जब गांधी ने गोरे शासकों के परमिट व अंगुलियों के निशान देने के आदेश को नकारा था और कहा था कि हम अंगुलियों पर निशान नहीं लगवाएंगे। उस समय के गोरे शासक अड़े थे हिंदुस्तानियों की मांग को अपनी जिद, दमन व ताकत से तोड़ने पर, लेकिन वे झुके नही और विजयी हुए। आज भी कुछ वैसा ही उद्घोष है कि हम कागज़ नही दिखाएंगे। शासकों के रवैये भी वैसे ही हैं और हमें यकीन है कि नतीज़ा भी वैसा होगा। गांधी के अहिंसक सत्याग्रहियों की जीत होगी।

इन युवाओं के हाथ मे भी तिरंगा झंडा है और संकल्प है भारतीय संविधान का। यह आईना है भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का, जिसे जनता ने महात्मा गांधी की अगुवाई में अनेक बलिदान देकर लड़ा था। वह संविधान, जिसे बाबा साहब अम्बेडकर ने हमारे राष्ट्रीय मूल्यों , सिद्धान्तों एवं मान्यताओं के साथ जनता को समर्पित किया था, आज उसी विचार व त्याग की अमर गाथा का पुनर्पाठ यहाँ चल रहा है।

बापू की शक्ति कस्तूरबा थीं। इस सत्याग्रह में महिलाओं की भूमिका पुरुषों से चार कदम आगे है। शाहीनबाग़ में महिलाओं के धरने में 90 वर्ष की वृद्धा से लेकर अपनी माँ की गोद में बैठी बेटी तक है। यह वह प्रयोग है, जो संत विनोबा भावे ने पवनार में ब्रह्म विद्या मंदिर की स्थापना कर उसका नेतृत्व महिलाओं को देकर किया था। यह एक ऐसा सफल प्रयोग है कि यदि महिलाओं को कोई भी जिम्मेवारी दे दो, तो वे इसे बेहतर तरीके से निभाएंगी। राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व सदस्य व प्रख्यात शायर और समाज सुधारक हाली पानीपती की प्रपौत्री सईदा हमीद ने वर्ष 1982-84 के दौरान 'बेजुबान की जुबान' नाम से अपने सर्वे में बताया था कि मुस्लिम महिलाओं को अवसर मिले तो वे पुरुषों के मुकाबले ज्यादा बेहतर साबित होंगी और यह बात यहाँ प्रमाणित हो रही है। कुछ लोगों ने इन सत्याग्रहियों पर मिथ्या व घृणित आरोप लगाया कि इन औरतों को पांच-पांच सौ रुपये दिहाड़ी पर बैठाया गया है तो इन्ही वीरांगनाओं का जवाब था कि विरोधी पांच हजार रुपये देकर भी किन्हीं को बिठा कर दिखाएं। शाहीन बाग़ की महिलाओं ने पूरे मुल्क़ को राह दिखाई है और यही कारण है कि आज हर छोटे बड़े शहर में महिलाओं का यह सत्याग्रह उरूज़ पर है। इन महिलाओं के समर्थन में रोजाना सैंकड़ों महिलाओं के जत्थे पूरे देश से इनकी एकजुटता के लिए आ रहे हैं, जो इनकी ताकत व हौसला हैं। इन सत्याग्रहियों का यह भी मानना है कि जलियांवाला बाग नरसंहार के शताब्दी वर्ष में सरकार ने जामिया मिलिया में घुस कर निहत्थे छात्रों पर गोली, लाठी व दमन चक्र चला कर इसे जामियावाला कांड बना दिया है। पर इस निंदनीय कांड ने छात्रों के अहिंसक प्रतिवाद का भी दर्शन करवाया है।

बादशाह खान सीमांत गांधी के युवा दस्ते ख़ुदाई ख़िदमतगार (हिन्द) के सदस्य, जिस तरह से इस सत्याग्रह का सहयोग कर रहे हैं, वह सर्वदा प्रसंशनीय है। इसे समर्थन दे रहे है —राष्ट्रीय मूवमेंट फ्रंट, सर्व सेवा संघ, गांधी ग्लोबल फैमिली व महात्मा गांधी द्वारा स्थापित हरिजन सेवक संघ के नेता व कार्यकर्ता। मुझे खुद इन आंदोलनकरियों के बीच तीन दिन रहने का मौका मिला। मैं समझता हूं कि बा बापू जयंती के 150 वें वर्ष में यह गांधी विचार के युवाओं के हाथ में आगमन की अवस्था है, जिसका प्रत्येक गांधी सेवक को समर्थन करना चाहिए। यह एक ऐसा अवसर है, जो एक इम्तहान भी है और प्रयोग भी। और निश्चित रूप से जीतेगा गांधी का सत्याग्रह विचार ही। ❑

नागरिकता संशोधन कानून-2019 में नागरिकता बोध के विरोधाभास

❑ धनंजय त्रिपाठी

2019 में संशोधित नागरिकता कानून अपने तीन पड़ोसी देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में धार्मिक रूप से शोषित अल्पसंख्यकों को तरजीह देकर नागरिकता देने की बात करता है। जबकि इसके पूर्व भारत के नागरिक बनने के पांच संवैधानिक तरीकों में किसी प्रकार का धार्मिक परिचय या जुड़ाव का कॉलम नहीं है। यानि किसी प्रकार की धार्मिकता भारतीय नागरिक बनने की योग्यता नहीं बनाई गयी है। युद्धग्रस्त, शोषित, परेशान, जरूरतमंद शरणार्थियों का बतौर जिम्मेदार व नैतिक राष्ट्र, हम हमेशा से खुले मन से स्वागत करने वाले देश रहे हैं। श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार, बांग्लादेश और तिब्बत से समय समय पर भारत आए जरूरतमंद शरणार्थियों के प्रति हमारा सहिष्णु और आतिथ्यबोध का रवैया जगजाहिर है। 2019 के कानून के खिलाफ भारी संख्या में लोग सड़कों पर उतरकर विरोध कर रहे हैं। विरोधियों का कहना है कि संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित 'धर्मनिरपेक्षता' के मूल्य इस नागरिकता कानून से चोटिल हो रहे हैं। जब हम पड़ोसी देश से नागरिकता मांग रहे शरणार्थियों के आधार पर अंतर करने लगेंगे तो हम कैसे वसुधैव कुटुंबकम के श्लोक वाले देश रह जाएंगे भला?

विदेश नीति और वैश्विक मंच

उपरोक्त कानून बनाने के बाद हम अधिकृत तौर पर कह रहे हैं कि हमारे पड़ोसी देशों में अल्पसंख्यकों के साथ बुरा बर्ताव होता है। जबकि इसके समर्थन में न तो हम कोई आंकड़ा दे रहे हैं और न ही पड़ोसियों से किसी प्रकार के संवाद में गए हैं। न ही हमने किसी अधिकृत वैश्विक मंच—यूनाइटेड नेशन, सार्क आदि जगहों पर मानवाधिकार उल्लंघन की बात उठायी है। इस कानून को बनाने और चर्चा के क्रम में सत्तानशीन बीजेपी उपरोक्त देशों से पारम्परिक मित्रतापूर्ण संबंधो को क्षति पहुंचा रही है। यूरोपियन यूनियन सहित कई देशों ने और विदेशी मीडिया ने भी इस कानून को मुस्लिम विरोधी और भेदभावपूर्ण बतलाया है। यह हमारे देश के लिए चिंता का विषय बनता दिख रहा है।

असम का अनुभव

6 साल चले नागरिकता रजिस्टर के काम में मीडिया रपटों के अनुसार असम में लगभग 16 सौ करोड़ रूपये राजकोष से खर्च हुए हैं और जनता द्वारा कागजात की तैयारी आदि में जो खर्च हुए हैं, वह अनुमानतः 7 सौ करोड़ के आसपास है। साढ़े तीन करोड़ की जनसंख्या में रजिस्टर बनने के बाद उन्नीस लाख लोग नागरिकता सूची से बाहर कर दिए गए हैं। पूरे देश में 130 करोड़ की जनसंख्या पर लागू होने पर न जाने कितने रूपये खर्च होंगे और कितने लोग नागरिकता से बाहर होंगे, ये सिहरन पैदा करने वाला आंकड़ा होगा।

राष्ट्रपति का अभिभाषण, गृहमंत्री और संसद के विरोधाभास

देश के नाम अपने सम्बोधन में राष्ट्रपति, कानून लागू करना सरकार की प्रतिबद्धता बतलाते है। संसद में बहस के दौरान गृहमंत्री खुद कहते हैं कि एनआरसी तो लागू होकर रहेगी। जबकि प्रधानमंत्री देश भर में नागरिकता संशोधन कानून और रजिस्टर के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों के बीच कहते हैं कि नागरिकता रजिस्टर की कोई बात नहीं हो रही है। ये अपने आप में एक अजीब स्थिति है।

दिसंबर 2019 में सीएए के खिलाफ हुए प्रदर्शन

नागरिकता संशोधन कानून लागू होने के क्रम में आम जन में परिचय पत्र और जन्म प्रमाण पत्र आदि बनवाने की जद्दोजहद शुरू हुई और आर्थिक मोर्चों पर नाकाम सरकार का एक भी आश्वासन जनता पर असर नहीं कर पाया। देश के प्रमुख शहरों में व्यापक स्तर पर सरकार के खिलाफ आम आदमी ने सड़क पर उतर कर विरोध दर्ज कराया है।

पुलिस दमन

देश भर में हुए प्रदर्शनों के बीच पुलिस हिंसा की अजीबोगरीब स्थिति बनी। अकेले उत्तर प्रदेश में हुई हिंसा में 23 लोगों की जान गयी है। सैकड़ों बुरी तरह से घायल हैं। छात्रों, सामाजिक व राजनैतिक कार्यकर्ताओं की गंभीर आपराधिक धाराओं में गिरफ्तारी की गयी है।

छात्रों की जाँच कमिटी

दिसंबर 2019 में हुए विरोध प्रदर्शनों और उत्तर प्रदेश में पुलिस की भूमिका पर उपरोक्त तथ्य छात्रों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं की फैक्ट फाइंडिंग टीम की जाँच में निकलकर सामने आये हैं। मुजफ्फरनगर, मेरठ, सहारनपुर, अलीगढ़, कानपूर, बदायूं, इलाहबाद, मऊ, आज़मगढ़ गोरखपुर और बनारस में पुलिस ने भारी बल प्रयोग किया है। बीएचयू, जेएनयू, एएमयू लखनऊ विवि आदि 30 से ज्यादा ख्यातिलब्ध संस्थानों के छात्रों और विभिन्न सामाजिक कार्यकर्ताओं की साझी टीम ने हिंसा प्रभावित जगहों पर पंहुचकर प्रभावितों से चर्चा करके अपनी रिपोर्ट जारी की है।

नागरिक सत्याग्रह पदयात्रा

यह रिपोर्ट आने के बाद छात्रों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं की टीम ने तय किया की हिंसा प्रभावित जगहों पर पंहुचकर गाँधी के प्रेम और शांति के सन्देश देते हुए भाईचारे, अमन और अहिंसा की बात करेंगे। यात्रा में शामिल कार्यकर्ताओं ने बताया कि साझी पहलकदमी से शुरू हुई यह यात्रा समाज में बढ़ रही असहिष्णुता, हिंसा, घृणा और कट्टरता के ख़िलाफ़ भाईचारे, प्रेम, सद्भाव और सहिष्णुता की अपील के साथ चल रही है। नागरिक सत्याग्रह पदयात्रा की शुरुआत चौरीचौरा के शहीद स्मारक से गत 2 फरवरी 2020 को हुई। रामचंद्र गुहा की पुस्तक 'गांधी : भारत से पहले' के प्रथम अध्याय के पाठ के बाद प्रारंभ हुई यात्रा में सद्भाव और शांति की अपील के साथ लोगों से संवाद के माध्यम से समाज में बढ़ते ध्रुवीकरण व बिगड़ते सामाजिक सौहार्द पर चर्चा की जा रही है। प्रयास है कि यात्रा संभावित सामाजिक समाधान की भी तलाश करे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान इसी चौरीचौरा में पुलिस दमन के खिलाफ जनता के द्वारा हिंसा की घटना घटी थी। गुस्साई भीड़ ने 5 फरवरी 1922 को 23 अंग्रेज सिपाहियों को एक कोठरी में बंद करके जिंदा जला दिया था। उस समय असहयोग आंदोलन चरम पर था। इतने बड़े पैमाने पर हिंसा होने के कारण गांधी जी ने 12 फरवरी 1922 को असहयोग आंदोलन को वापस लेने की घोषणा की। बापू ने यंग इंडिया में तब लिखा था कि, 'आन्दोलन को हिंसक होने से बचाने के लिए मैं हर एक अपमान, हर एक यातनापूर्ण बहिष्कार, यहाँ तक कि मौत भी सहने को तैयार हूँ।' अहिंसा और हिंसा का विमर्श बापू के लिए जीवन के पूरे कैनवस पर इंसान होने की कसौटी थी।

चौरीचौरा कांड के बाद असहयोग आंदोलन को वापस लेने के पीछे गांधी जी का यह तर्क था कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन हिंसा व हथियार के बल पर नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा, शांति, सत्याग्रह जैसे जनतांत्रिक मूल्यों पर आगे बढ़ेगा। उसी मानवीय विमर्श को आज फिर से जिंदा करने की जरूरत समझ आ रही है। इस यात्रा के माध्यम से पदयात्री समाज में बढ़ रही अशांति और भय के प्रति समाज को सचेत करने की कोशिश करेंगे और जनसंवाद कर अहिंसा, प्रेम और भाईचारे का संदेश देंगे। ❑

बजट-2020
नौजवानों के भविष्य को सुरक्षित करने वाला रास्ता बंद

❑ आलोक जोशी

मांग का क्या होगा, ग्रोथ का क्या होगा, रोज़गार का क्या होगा? बजट के पहले सबके मन में यही सवाल थे और उम्मीद थी कि साफ़ जवाब मिलेंगे. ज्यादा आशावादी लोग कुछ ऐसी धमाकेदार घोषणा सुनने की तैयारी में थे, जिससे अर्थव्यवस्था की तस्वीर ही बदल जाएगी. इन सवालों का तो कोई साफ़ जवाब दो घंटे 41 मिनट के भाषण में मिला नहीं, दीनानाथ कौल की कश्मीरी कविता और तमिल में तिरुवल्लुवर तथा संस्कृत में कालिदास के उद्धरण सुनने को ज़रूर मिले. इतिहास पर भी ज्ञान मिला और ये भी पता चला कि सिंधु सभ्यता से भी व्यापार की प्रेरणा ली जा सकती है.

इनकम टैक्स में विकल्प दे दिया गया है कि आप चाहें तो टैक्स पर मिलने वाली छूट को त्याग दें और बदले में क़रीब पांच फ़ीसदी कम टैक्स भरें. ये चुनाव आपको करना है और ये चुनाव कोई भी कर सकता है, लेकिन पंद्रह लाख रुपए से ऊपर की कमाई पर टैक्स का रेट नहीं बदलेगा. इसलिए ऐसी उम्मीद नहीं है कि सबसे ज्यादा रेट पर टैक्स भरने वाले यानी टॉप टैक्स ब्रैकेट वाले लोगों में से कोई इस तरफ़ झुकेगा.

दूसरी तरफ़ ढाई से पांच लाख रुपए कमाने वाले लोग आसानी से ये रास्ता चुन सकते हैं. ख़ासकर वे, जिन्होंने अभी काम शुरू किया है और जिनके ऊपर न तो होम लोन का बोझ है, न ही उन्होंने टैक्स बचाने के लिए कोई इंश्योरेंस पॉलिसी या ऐसा कोई इंतजाम किया हुआ है, जिसमें उन्हें हर साल पैसा भरना पड़ता हो.

एकदम फूलप्रूफ फॉर्मूला

इनके लिए नया फॉर्मूला पहली नज़र में ही अच्छा दिख रहा है. वित्त मंत्री ने उन्हें ललचाने के लिए कह भी दिया कि 15 लाख कमाने वाले की इस तरह 73 हज़ार रुपए की बचत हो सकती है. यानी आज ये रास्ता पकड़ लो तो कमाई 15 लाख होने तक फिक्र नहीं करनी है. रिटर्न भी पहले से भरा हुआ मिलेगा तो मेहनत भी बच गई. अब क्या है, फोन उठाइये, स्विगी बुलाइये या ऊबर ईट्स पर ऑर्डर दे डालिये. इतना बचा है, खर्च नहीं करेंगे? देश में खपत भी तो बढ़ानी है. खर्च करोगे तभी तो अर्थव्यवस्था में तेजी आएगी. एकदम फूलप्रूफ फॉर्मूला है! आपकी बचत और देश की तरक्की एक साथ, स्वाद ऊपर से.

काश ऐसा ही होता, लेकिन ऐसा है नहीं. इस सबके बीच जो बात कही नहीं गई, मगर जरा-सा सोचने पर समझ में आ रही है, वो ये है कि ये रास्ता अंधेरे भविष्य की ओर जाता है. टैक्स में ये छूट इसलिए दी जाती थी कि सरकार बचत की आदत को बढ़ावा देना चाहती थी. इससे दो फायदे थे. जिसकी बचत होती थी उसे आज टैक्स में छूट और भविष्य में एक मोटी रकम मिलती थी और सरकार को भी कुछ ऐसी रकम कर्ज के तौर पर मिल जाती थी, जिसकी वापसी की तारीख भी तय थी और जो बाजार के रेट के मुकाबले कम ब्याज पर भी मिल रही थी. जबकि जमा करने वाले के लिए ये ब्याज भी कम नहीं था क्योंकि साथ में टैक्स पर छूट का हिसाब भी जुड़ जाता था. अब ये छूट नहीं मिलेगी तो लोगों के पास कोई आकर्षण नहीं रहेगा. कोई मजबूरी और इसका खामियाजा उन्हें जब समझ में आएगा, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी.

टैक्स एक्सपर्ट शरद कोहली का कहना है कि ये फैसला या ये रास्ता खासकर उन नौजवानों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है, जो अभी कमाना शुरू कर रहे हैं. उन्होंने एक रोचक आंकड़ा भी दिया. उन्होंने बताया कि जीवन बीमा या लाइफ इंश्योरेंस की सत्तर परसेंट पॉलिसियां जनवरी से मार्च के बीच में बिकती हैं. यही वह समय होता है, जब शरद जैसे सलाहकार, लोगों को टैक्स बचाने के नुस्खे दे रहे होते हैं. उनका कहना है कि अधिकतर मामलों में पंद्रह बीस साल बाद ऐसे ही लोग उनके सामने आभार जता रहे होते हैं कि आपने ये न करवाया होता तो आज ये पैसा न होता. और इससे भी ज्यादा आभार जताने वाले वे बदनसीब परिवार होते हैं, जिनका कमाने वाला पॉलिसी करवाने के बाद किसी हादसे का शिकार हो चुका होता है.

इसलिए जरूरी है कि सरकार इस मामले पर फिर विचार करे और अपने आप को ही इस सवाल का जवाब भी दे कि एक तरफ वह इन्फ्रास्ट्रक्चर में पैसा लगाने वाले 100 परसेंट विदेशी फंडों का पूरा टैक्स माफ करने को तैयार है, तो भारत में नौजवानों के भविष्य को सुरक्षित करने वाले इस रास्ते को बंद करके उनके साथ ये खिलवाड़ क्यों कर रही है?

-बीबीसी

बजट में पारदर्शिता
कई बड़े राज्य फिसड्डी

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इंडिया की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक केन्द्रीय बजट में अभी भी कई ज़रूरी प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया जाता है. हर साल की तरह इस साल भी फरवरी महीने की पहली तारीख को संसद में बजट पेश किया गया. संसद में इसे प्रस्तुत करने के बाद इस पर कड़ी बहस और चर्चा होती है. वहीं दूसरी ओर आमतौर पर राज्यों के बजट महत्वपूर्ण सार्वजनिक चर्चा के बिना ही राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित कर दिए जाते हैं. नतीजतन ज्यादातर राज्यों का बजट समावेशी और पारदर्शी न होने के कारण आम नागरिकों की उम्मीदों के अनुकूल नहीं होता है.इसी मुद्दे पर गैर सरकारी संस्था 'टांसपेरेंसी इंटरनेशनल इंडिया' ने राज्यों के बजट में पारदर्शिता को लेकर 'बजटीय प्रक्रिया में पारदर्शिता' नाम से एक रिपोर्ट जारी की है, जिसमें केंद्र और सभी राज्यों के बजट में पारदर्शिता की स्थिति का विश्लेषण किया गया है और उनके प्रदर्शन के आधार पर उन्हें स्कोर (अंक) दिया गया है.रिपोर्ट के मुताबिक असम

70 अंकों के साथ पहले स्थान पर है. वहीं 66 अंकों के साथ ओडिशा दूसरे स्थान पर है और 64 अंकों के साथ आंध्र प्रदेश तीसरे नंबर पर है. 61 के स्कोर के साथ झारखंड चौथे, 58 के स्कोर के साथ बिहार पांचवें तथा 57 के स्कोर के साथ मध्य प्रदेश छठवें स्थान पर है. बजट पारदर्शिता में निचले पांच राज्य, गोवा (43), महाराष्ट्र (34), पंजाब (29), मेघालय (28) और मणिपुर (25) हैं.

बजट पारदर्शिता के मामले में कई बड़े राज्यों की हालत काफी खराब है. इस सूची में पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य शामिल हैं.'बजटीय प्रक्रिया में पारदर्शिता रिपोर्ट' में राज्य के बजट का विश्लेषण चार व्यापक मानकों के तहत किया गया है, जिन्हें 18 उप-मापदंडों के आधार पर अंक दिए गए हैं. संस्था का कहना है कि ये सभी मानक अंतराष्ट्रीय स्तर के मानकों पर आधारित हैं.रिपोर्ट में उपयोग किए गए चार व्यापक मानक क्रमशः इस प्रकार हैं- महत्वपूर्ण बजट दस्तावेजों का सार्वजनिक प्रकाशन और आम लोगों में बजट की सुलभ उपलब्धता के लिए 40 प्रतिशत, भागीदारी और समावेशी बजटीय प्रक्रिया के लिए 25 प्रतिशत, बजट उपरांत प्रबंधन और पारदर्शिता के लिए 25 प्रतिशत और बजट को अधिक पारदर्शी तथा नागरिकों के अनुकूल बनाने के लिए किए गए विशेष प्रयास के लिए 10 प्रतिशत अंक दिए गए हैं.ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इंडिया के कार्यकारी निदेशक रामनाथ झा ने कहा कि 'सभी राज्य सरकारों के खर्च का योग केंद्र सरकार के खर्च से कई गुना ज्यादा होता है. प्रमुख योजनाओं को लागू करने का अधिकार राज्य सरकारों के पास होता है. इसलिए यह आवश्यक है कि राज्य के बजट को सार्थक चर्चा के लिए सार्वजनिक पटल पर लाया जाए, जिससे आम नागरिकों का भी सुझाव बजट में लिया जा सके. शिक्षा, स्वास्थ्य, पानी आदि पर विभिन्न राज्यों द्वारा खर्च की स्थिति-रिपोर्ट के मुताबिक शिक्षा पर खर्च के मामले में दिल्ली सबसे ऊपर है. साल 2019-20 के दौरान दिल्ली सरकार ने कुल खर्च का 28 फीसदी शिक्षा पर खर्च किया है. वहीं असम ने इस दौरान कुल खर्च का 22 फीसदी शिक्षा पर खर्च किया है.

शिक्षा पर महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तराखंड ने वित्त वर्ष 2019-20 के दौरान कुल खर्च का 19 फीसदी खर्च किया है. वहीं बिहार, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश और पश्चिम बंगाल ने 18 फीसदी राशि खर्च की है. ट्रांसपेरेंसी इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक स्वास्थ्य पर खर्च के मामले में भी दिल्ली सरकार अव्वल रही है. दिल्ली ने कुल खर्च का 14 फीसदी स्वास्थ्य पर खर्च किया है. वहीं असम ने सात फीसदी और आंध्र प्रदेश, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान तथा उत्तराखंड ने छह फीसदी खर्च किया है.बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, केरल, मध्य प्रदेश, ओडिशा, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल की स्थिति काफी खराब है. इन राज्यों ने साल 2019-20 के दौरान कुल खर्च का सिर्फ पांच फीसदी स्वास्थ्य पर खर्च किया है. कर्नाटक, महाराष्ट्र, पंजाब और तेलंगाना ने और कम, सिर्फ चार फीसदी स्वास्थ्य पर खर्च किया. सामाजिक कल्याण से जुड़ी योजनाओं पर खर्च के मामले में आंध्र प्रदेश पहले नंबर पर है. आंध्र प्रदेश ने साल 2019-20 के दौरान कुल खर्च का 12 फीसदी हिस्सा सामाजिक कल्याण से जुड़ी योजनाओं पर खर्च किया.वहीं तेलंगाना ने 10 फीसदी, कर्नाटक, ओडिशा तथा पश्चिम बंगाल ने आठ फीसदी, हरियाणा ने सात फीसदी और बिहार, दिल्ली एवं राजस्थान ने छह फीसदी खर्च किया है. रिपोर्ट के मुताबिक राज्य सरकारें अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए काफी कम राशि खर्च कर रही हैं. साल 2019-20 में आंध्र प्रदेश और तेलंगाना ने कुल खर्च का सर्वाधिक छह फीसदी अल्पसंख्यक कल्याण की योजनाओं पर खर्च किया. कर्नाटक और महाराष्ट्र ने पांच फीसदी, ओडिशा ने तीन फीसदी, असम, बिहार, केरल एवं तमिलनाडु ने दो फीसदी और छत्तीसगढ़, पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड ने अल्पसंख्यक कल्याण की योजनाओं पर सिर्फ एक फीसदी खर्च किया है. **-द वायर**

बजट और विनोबा

5 नवम्बर 2009 को दिवंगत हुए प्रभाष जोशी 3 नवम्बर को वाराणसी में थे। सर्व सेवा संघ के सभागार में आयोजित उस लोकबैठकी में दिया गया यह भाषण उनके जीवन का अंतिम भाषण था। उन्होंने एक रोचक किस्सा सुनाया—''

रामकृष्ण हेगड़े तब योजना आयोग के उपाध्यक्ष थे। पंचवर्षीय योजना के भारी-भरकम ड्राफ्ट पर देश के बड़े पत्रकारों, बौद्धिकों और समाजशास्त्रियों की राय मांगी गयी थी। प्रभाष जी भी आमंत्रित थे। रामकृष्ण हेगड़े ने ड्राफ्ट पर उनकी राय जाननी चाही। जवाब में प्रभाष जी ने उन्हें विनोबा के मुंह से सुनी एक कहानी सुनायी–

1951 में जब प्रथम पंचवर्षीय योजना का ड्राफ्ट बनकर तैयार हुआ, तो सरकार ने पवनार आश्रम दूत भेजा और कहलाया कि विनोबा जी एक बार ड्राफ्ट देख लें तो इसे फाइनल किया जाय। बाबा ने कहला भेजा कि पदयात्रा करके दिल्ली पहुंचूंगा। लगभग 50 की संख्या में नौजवानों, महिलाओं और अपने अनुयायियों के साथ पदयात्रा करते हुए जब बाबा दिल्ली आये तो योजना भवन से फिर बुलावा पहुंचा। उनके सामने पहली योजना का पूरा ड्राफ्ट रखा गया। उन्होंने उसे उलटा पुलटा, फिर इधर-उधर कुछ देखा और बोले- यह सब एक साथ कैसे देखूं! इतना बता दो कि इस योजना में क्या ऐसा कुछ है, जिससे समाज की सबसे निचली सीढ़ी पर खड़े अंतिम आदमी का कुछ भला हो सके? इस अनपेक्षित सवाल ने तो सबको निरुत्तर ही कर दिया। जवाब मिला-बाबा, यह तो पांच सालों की योजना है। ऐसी कितनी ही योजनाएं लानी पड़ेंगी। समाज का भला तो होगा ही। इसीलिए तो इसे बनाया है। विनोबा को उनके प्रश्न का उत्तर नहीं मिला। वे बोले-तब इसे देखकर मैं क्या करूंगा? अगर इससे अंतिम व्यक्ति को कोई सीधा लाभ नहीं मिलता, तो मेरे लिए यह बेकार है–

ये कहानी सुनाकर प्रभाष जी ने रामकृष्ण हेगड़े से कहा कि इस मौके पर मुझे भी बाबा की वही बात दोहरानी है। बैठक में सन्नाटा खिंच आया। अचानक सबने देखा रामकृष्ण हेगड़े की आंखों में आंसू झिलमिला रहे थे। थोड़ा संयत होकर वे बोले--प्रभाष जी, जब बाबा ने यह बात कही थी, तो मैं उनके पीछे ही खड़ा था। पवनार से बाबा के साथ दिल्ली आने वाले नौजवानों में एक नाम मेरा भी शामिल है। लेकिन बाबा के सवाल का जवाब न तब की सरकार के पास था, न आज मेरे ही पास है।''

आज न विनोबा हैं, न प्रभाष जोशी और न रामकृष्ण हेगड़े। लेकिन वह सवाल है कि इस या उस...तमाम बजटों, योजनाओं और नीतियों के सामने अपने जवाब के इंतजार में उसी तरह तन कर खड़ा है। **–प्रेम प्रकाश**

दुनिया के मुकाबले बदहाल है भारत की शिक्षा व्यवस्था

❑ **विकास तिवारी**

अभी-अभी सम्पन्न हुए दिल्ली विधानसभा के चुनाव, आम आदमी की बुनियादी जरूरतों, खासकर शिक्षा और स्वास्थ्य के मुद्दे पर लड़े गये। भारत में शिक्षा व्यवस्था की हालत पर हर चुनाव से पहले चर्चा होती है. लेकिन इस चर्चा में न तो नेता दिलचस्पी लेते हैं और न ही टीवी चैनल, देखते ही देखते अगले पांच साल के लिए ये मुद्दा फिर कहीं गायब हो जाता है. लेकिन इस मुद्दे पर इस बार बहस तब शुरू हुई जब भारतीय मूल के अमेरिकी अर्थशास्त्री और नोबेल विजेता अभिजीत बनर्जी ने सवाल खड़े किए. उन्होंने जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में कहा कि अगर वे भारत में होते तो शायद ही नोबेल जीत पाते. नोबेल विजेता के इस बयान ने पूरे देश के युवाओं को सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या वाकई वे एक ऐसे देश में रहते हैं, जहां शिक्षा के मुद्दे को हाशिए पर रखा जाता है. भारत में उच्च शिक्षा व्यवस्था को समझने के लिए नोबेल विजेता अभिजीत बनर्जी ने क्या कहा था, उसे समझने की जरूरत है।
-सं.

टैलेंट की नहीं, सिस्टम की कमी

अभिजीत बनर्जी ने अपने बयान में साफ कहा कि भारत में टैलेंट की कोई कमी नहीं है, लेकिन यहां एक सिस्टम की जरूरत है. भारत में टैलेंट को किस कदर नजरअंदाज किया जाता है, इसका एक बड़ा उदाहरण हाल ही में देखने को मिला. पिछले साल बिहार के जाने-माने गणितज्ञ वशिष्ठ नारायण सिंह का निधन हुआ था, जिनके टैलेंट की दुनिया कायल थी. यहां तक कि नासा भी उनके दिमाग के आगे नतमस्तक था. लेकिन भारत में उन्हें जीते जी तो सम्मान मिला नहीं, मरने के बाद भी लावारिस की तरह उनकी लाश हॉस्पिटल के बाहर पड़ी रही.

एक बात और ध्यान देने वाली है. अब तक जितने भी नोबेलिस्ट हुए हैं, उनमें से किसी ने भी अपनी रिसर्च भारत में नहीं की. जब उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला, तब वे भारतीय मूल के विदेशी हो गए थे. फिर चाहे वो हरगोविंद खुराना, सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर, अमर्त्य सेन, वेंकट रामकृष्णन हों या अभिजीत बनर्जी, सबने नोबेल मिलने तक विदेशी नागरिकता ले ली थी.

शिक्षा को लेकर सरकार का रुख

किसी भी देश को तरक्की करने के लिए उस देश के युवा का शिक्षित होना जरूरी है. भारत सरकार ने 2019-20 के लिए कुल जीडीपी का सिर्फ 3.4% ही शिक्षा पर खर्च किया. भारत का 2019-20 के लिए कुल बजट 3401639 करोड़ है, और सरकार कुल बजट में से शिक्षा पर सिर्फ 93847.64 करोड़ खर्च कर रही है, जिसमें से हायर स्टडी के लिए 37461 करोड़ खर्च किया जाना है. भारत सरकार के शिक्षा के प्रति इसी रवैये के कारण आज भी भारत की कोई यूनिवर्सिटी टॉप 100 में भी जगह नहीं बना पाई है.

विश्व की 5वीं सबसे बड़ी इकनॉमी वाला देश यूनाइटेड किंगडम है और भारत विश्व का 7वां सबसे बड़ा इकनॉमी वाला देश है. यूके अपनी जीडीपी का 6.23% शिक्षा पर खर्च करता है. यूके विश्व में दूसरा सबसे ज्यादा नोबेल जीतने वाला देश है, जहां की जनसंख्या भारत के तुलना में आधे से भी कम है. लेकिन शिक्षा पर खर्च भारत से कहीं ज्यादा है. भारत के पास दुनिया की दूसरी बड़ी आबादी है. और शिक्षा पर बाकी देशों की तुलना में भारत की जीडीपी का सिर्फ 3.4% खर्च होता है.

रिसर्च करने वालों के लिए भारत में सुविधाएं

भारत में एक स्टूडेंट को रिसर्च करने के लिए सबसे पहले नेशनल एलिजिबिलिटी टेस्ट पास करना होता है. इसे यूजीसी नेट भी कहते हैं. इस टेस्ट को पास करने के बाद सरकार की तरफ से स्टूडेंट को रिसर्च करने के लिए फेलोशिप दी जाती है. सरकार जेआरएफ क्लियर करने वाले स्टूडेंट को फेलोशिप के तौर पर करीब रुपये 35000 प्रति महीने देती है.

इकनॉमिक टाइम्स में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक 2017-18 के इकनॉमी सर्वे में भारत के तत्कालीन वितमंत्री अरुण जेटली ने संसद में कहा था कि साइंस और रिसर्च डेवलपमेंट में और अधिक खर्च करने की जरूरत है. साइंस और रिसर्च पर भारत जीडीपी का सिर्फ 0.6 से 0.7 प्रतिशत खर्च करता है. रिपोर्ट के मुताबिक रिसर्च पर जीडीपी का सबसे ज्यादा खर्च करने वाला देश इजरायल (4.3) है. दूसरे नंबर पर कोरिया (4.2), अमेरिका (2.8) और फिर चीन (2.1) हैं.

भारत में रिसर्चर्स का हाल बेहाल

यूजीसी के मुताबिक 2017 में भारत में 912 ऐसे इंस्टीट्यूशन थे, जो पीएचडी की मानक उपाधि दे सकते हैं. द हिंदू में छपे एक आर्टिकल के मुताबिक भारत में टॉप की यूनिवर्सिटीज हर साल लगभग 2,500 साइंस के स्टूडेंट्स को पीएचडी की डिग्री देती हैं. अकेले केमिस्ट्री में, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास हर साल 25 से अधिक पीएचडी देता है. हर साल भारत में आईआईटी से 150 केमिस्ट्री पीएचडी होती हैं. भारत में केमिस्ट्री से करीब 800 स्टूडेंस हर साल पीएचडी की डिग्री हासिल करते हैं और रोजगार लगभग 100 स्टूडेंट्स को ही मिल पाता है.

भारत में बेरोजगारी का आलम ये है कि एक पीएचडी होल्डर को चपरासी की भी नौकरी के लिए फॉर्म भरने की खबरें सामने आती रहती हैं. जिस देश के रिसर्चर्स को उनकी काबिलियत के मुताबिक नौकरी नहीं मिल रही हो और अपना गुजारा करने के लिए चपरासी की नौकरी भी मंजूर हो, तो कैसे उसे नोबेल या इस तरह का कोई बड़ा पुरस्कार मिलेगा.

रिसर्च के लिए विदेश चले जाते हैं ज्यादातर

विदेशों में जाकर वहां रिसर्च करने का सबसे बड़ा कारण ये है कि भारत में एक भी ऐसी यूनिवर्सिटी नहीं है, जो दुनिया की टॉप 100 लिस्ट में अपनी जगह बनाने में कामयाब हुई हो. जबकि यूके, अमेरिका, चीन, जर्मनी, फ्रांस आदि में ऐसी कई यूनिवर्सिटीज हैं, जो टॉप 100 की लिस्ट में शामिल हैं, जहां की सरकार रिसर्च को लेकर पूरी तरह से सजग है और अपने रिसर्चर्स पर खूब पैसे खर्च करती है. यूनाइटेड किंगडम में रिसर्च करने वाले स्टूडेंट्स को वहां की सरकार रिसर्च के दौरान पार्ट टाइम जॉब की सुविधा भी देती है.

जर्मनी में स्टूडेंट्स को सिर्फ ग्रेजुएशन करने के बाद सरकार बाकायदा उन्हें विदेशों में घूमने के लिए फंड मुहैया कराती है. हालांकि अब विदेशों में पढ़ने वाले भारतीयों की संख्या में भी गिरावट देखी जा रही है. **–द क्विंट**

अध्यक्ष की कलम से

❑ महादेव विद्रोही

गांधी शहादत दिवस : 30 जनवरी को सेवाग्राम में सर्व सेवा संघ और सर्वोदय समाज की ओर से गांधी शहादत दिवस पर नागरिकता संशोधन कानून, एनआरसी और एनपीआर के खिलाफ एक विशाल उपवास तथा धरने का आयोजन किया। सेवाग्राम में पिछले 40 वर्षों में कभी भी सार्वजनिक प्रतिरोध का इतना बड़ा कार्यक्रम नहीं हुआ है। कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट पृष्ठ 19 पर देखें।

अधिवेशन की तैयारी : 30-31 मार्च को होने वाले अधिवेशन की तैयारी के सिलसिले में 1 एवं 2 फरवरी को कोट्टयम गया। वहां केरल सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष तथा जिला सर्वोदय मंडल के पदाधिकारियों से मिलना हुआ। सभी लोग तैयारियों में जुट गये हैं। अधिवेशन में निवास की व्यवस्था 2-3 जगहों पर होगी। दूसरा स्थल तो अधिवेशन स्थल से मात्र 100-150 मीटर के अंतर पर ही है। केरल में अभी से गर्मी का मौसम शुरू हो गया है। अधिवेशन के समय गर्मी थोड़ी और बढ़ जायेगी। प्रतिनिधियों को ओढ़ने के लिए ज्यादा कपड़े लाने की आवश्यकता नहीं है।

जो लोग कोट्टयम के अतिरिक्त अन्य जगहों पर घूमने जाना चाहते हैं, वे 31 मार्च के बाद का ही कार्यक्रम बनायें। अधिवेशन स्थल पर 1 अप्रैल की दोपहर तक ही व्यवस्था है, इसका ध्यान रखें। उसी तरह अधिवेशन के लिए आने वाले प्रतिनिधि 29 मार्च से पहले न पहुंचें। क्योंकि इससे पहले वहां निवास की कोई व्यवस्था नहीं है।

यज्ञ को भंग करने कोशिश : कुछ वर्षों से जब सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष के चुनाव का समय निकट आता है, तो कुछ लोग विघ्न डालने के हर संभव प्रयास करते हैं। 2017 के अधिवेशन के समय भी ऐसा ही एक प्रयास किया गया था। कुछ लोगों के बहकाने पर दो लोगों ने वर्धा के सहायक धर्मदाय आयुक्त के सामने आवेदन कर चुनाव को स्थगित करने की मांग की थी लेकिन धर्मदाय आयुक्त ने इसे स्वीकार नहीं किया था। फिर वे लोग मुंबई हाईकोर्ट में गये। मुंबई हाईकोर्ट ने उनका आवेदन सुनने से ही इनकार कर दिया।

इस बार फिर कुछ 'असली' सर्वोदय वाले सर्व सेवा संघ के यज्ञ में विघ्न डालने हेतु मैदान में आ गये हैं। हमने सुना है कि कुछ लोग सामानांतर सर्व सेवा संघ बनाने की कोशिश भी कर रहे हैं। मध्य प्रदेश में तो प्रदेश सर्वोदय मंडल बना ही लिया गया है। यह वैसे लोग हैं, जो लोकसेवक तक नहीं हैं, पर उन्हें मध्य प्रदेश सर्वोदय मंडल का पदाधिकारी बना दिया गया है।

इसी तरह अब कुछ ऐसे लोगों की सर्व सेवा संघ का अध्यक्ष बनने की इच्छा बलवती हो गयी है, जो लोकसेवक नहीं हैं। हमें यह भी जानकारी मिली है कि कुछ लोग सांप्रदायिक संगठनों के साथ मिलकर सर्व सेवा संघ पर

सरकार के नियंत्रण की दिशा में प्रयासरत हैं। हर तीन साल के बाद वे लोग 'असली' सर्वोदयी बन जाते हैं। पर अब समय बदल गया है, कार्यकर्ताओं ने ऐसे तत्त्वों को पहचान लिया है।

हम भारत के लोग : सीएए, एनआरसी तथा एनपीआर के खिलाफ गठित राष्ट्रीय मंच, 'हम भारत के लोग' की बैठक दिनांक 4 फरवरी 2020 को दिल्ली में हुई, जिसमें संघर्ष के अगले कार्यक्रमों पर विचार किया गया। बैठक में असम से लेकर जम्मू-कश्मीर तक के प्रतिनिधि उपस्थित थे। उत्तर प्रदेश में प्रतिदिन इस कानून का विरोध करने वालों की गिरफ्तारी पर चिंता व्यक्त की गई। उत्तर प्रदेश पुलिस किसी भी प्रकार के आंदोलन को कुचल डालने पर आमादा है। आंदोलन तो दूर, वे साधारण उपवास और विरोध का आयोजन भी नहीं करने दे रहे हैं। उत्तर प्रदेश पुलिस और सरकार की नजर में सभी देशद्रोही हैं। बैठक में राष्ट्र सेवा दल के अध्यक्ष प्रो. गणेश देवी, राजमोहन गांधी, मेधा पाटकर, योगेंद्र यादव, तीस्ता सेतलवाड़ आदि उपस्थित थे। बैठक से पहले कुछ प्रतिनिधि गांधी स्मृति गये, जहां बापू को गोली मारी गई थी। वहां जाकर सबने बापू को श्रद्धांजलि दी।

शाहीनबाग तथा संघर्ष के अन्य मोर्चों पर : खुदाई ख़िदमतगार हिन्द के साथियों के साथ निजामुद्दीन, ईदगाह, सीलमपुर, जामिया मिलिया इस्लामिया तथा शाहीनबाग जाकर संघर्ष के मोर्चे पर डटे भाई बहनों से मिलकर सर्व सेवा संघ की ओर से एकजुटता प्रकट की। जब रात के करीब साढ़े ग्यारह बजे मैं सीलमपुर पहुंचा, तब करीब पाँच सौ भाई- बहन ठंड की इस रात में भी मोमबत्ती लेकर खड़े थे। वहां महिलाओं तथा पुरुषों के अलग अलग धरने चल रहे हैं। इन सभी धरनास्थलों पर देश के विभिन्न भागों तथा विभिन्न धर्मों के लोग आकर इस संघर्ष के प्रति अपना समर्थन व्यक्त कर रहे हैं। शाहीनबाग में लंगर की जिम्मेवारी पंजाब के किसानों ने संभाल रखी है। आंदोलनकारियों को गांधीजनों से बहुत उम्मीद है। उन्होंने मुझसे कहा कि गांधी का रास्ता ही एकमात्र रास्ता है और आगे के संघर्ष के लिए हमें गांधीजनों से बहुत अपेक्षा है।

5 फरवरी को जामिया मिलिया में चल रहे धरने को संबोधित करने का अवसर मिला। धरने में बैठी बहनों से मैंने पूछा कि एक पार्टी के प्रवक्ता टीवी पर कहते हैं कि आप लोगों को धरने पर बैठने के लिए रोज 700 रुपये दिये जाते हैं। उसके जवाब में बहनों ने कहा कि हम उन्हें हजार रुपये रोज देने के लिए तैयार हैं, वे आकर धरने पर बैठें। जिन चार जगहों पर मुझे जाने का मौका मिला, उन सभी कार्यक्रमों का संचालन लड़कियां कर रही थीं और काफी सफलता के साथ कर रही थीं। यह देखकर मुझे काफी अच्छा लगा कि जिस समाज के बारे में कहा जाता है कि महिलाएं पर्दे से बाहर नहीं निकलती हैं, उस समाज की लड़कियां संघर्ष के मोर्चे पर तैनात हैं।

जितने लोगों से मेरी बातचीत हुई, उन सबकी समझ और समर्पण को देखकर मेरा उत्साह और बढ़ गया। शाहीनबाग में बीच-बीच में कुछ असामाजिक तत्त्व घुसकर वहां अव्यवस्था फैलाने की कोशिश करते रहते हैं, जिसमें से कई लोग पकड़े गये हैं, इनमें से एक महिला, जिसका संबंध किसी हिन्दूवादी संगठन से है, बुर्का पहनकर घुस आयी थी। इन सबको देखते हुए आयोजकों ने अब धरने में आने वाले हर व्यक्ति की जांच शुरू कर दी है। ❑

गांधी

एक ऐसी प्रतिध्वनि, जो आज भी सुनी जा रही है

(धनुक महोत्सव, कानपुर में हुई चर्चा की रिपोर्ट)

यह आयोजन था कानपुर में। स्वाधीनता के अमर सेनानी लाला लाजपतराय की स्मृति में शहर के बीचोंबीच बने लाजपत भवन में। सात सत्रों में विभाजित लगभग दस घंटे का भव्य कार्यक्रम। आमंत्रित अतिथि और प्रतिनिधि ठहराये गये थे शहर से 22 किलोमीटर दूर बिठूर में। बिठूर; स्वतंत्रता के पहले संग्राम 1857 का रणांगन, जहां की मिट्टी में नाना साहब पेशवा, तात्या टोपे, अजीमुल्ला खां और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की शौर्य-सुगंध आज भी तारी है। नानाराव स्मारक उद्यान में प्रकृति के मोहक रचाव के बीच बनी छोटी-छोटी कॉटेजेज का बसाव बरबस आल्हादित करता है। पूरे परिसर में जगह-जगह स्थापित आजादी के जियालों की प्रतिमाएं और शिलालेख मन के तारों को झंकृत करते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित यह परिसर 'धनुक-2020' में शामिल होने आये 'प्रतिशब्द' के अतिथियों की आरामगाह बना। प्रतिशब्द साहित्य कानपुर के साहित्यिकों की एकदम नयी गतिविधि है। प्रतिशब्द की प्रेरणा और संचालक शक्ति हैं डॉ. ज्योत्सना मिश्रा और इसके पायदान हैं, इनकी सशक्त टीम के समर्पित साथी डॉ. अलका मिश्रा, शीतल वाजपेयी, डॉ. राजेश व रोमी अरोड़ा और डॉ. राधा जैन। इस टीम में अधिकतर डॉक्टर हैं। डॉ. ज्योत्सना स्वयं स्त्री रोग विशेषज्ञ और ख्यातिलब्ध कवयित्री हैं। यह प्रतिशब्द का ही आयोजन था, जिसमें गांधी भी थे, कश्मीर भी था, कविता भी थी, संस्कृति और समाज की चिन्ताएं भी थीं और सुबह से देर रात तक चले इस पूरे आयोजन की साखी भरने 400 से 600 तक सुधी, संभ्रांत श्रोताओं और प्रतिभागियों की उपस्थिति भी थी।

'गांधी से कौन डरता है'—यह 1 फरवरी को लाजपत भवन, कानपुर में आयोजित धनुक-2020 के पहले ही सत्र का विषय था। इस चर्चा में प्रतिभाग करने के लिए मंच पर उपस्थित थे, सुविख्यात हिन्दी कवि पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी, वरिष्ठ साहित्यकार व पत्रकार विजय किशोर मानव, कथाकार प्रियंवद, गांधी अभ्यासक पराग मांडले ओर सर्वोदय जगत के सह संपादक प्रेम प्रकाश। सत्र के संचालक के तौर पर प्रेम प्रकाश ने विषय प्रवेश कराया और आमंत्रित चर्चा की पूर्वपीठिका रखी। उन्होंने कहा कि हजारों साल की गुलामी झेलते हुए भारत ने मुगलों से होते हुए अंग्रेजों के समय तक गुलामी के बंधन तोड़ डालने की छटपटाहट भी साथ-साथ झेली। एक राष्ट्र के रूप में निरंतर पराभव का सामना करते देश ने फिर भी कभी अपने प्रयत्न नहीं छोड़े और टुकड़े-टुकड़े में ही सही, आजादी का बिगुल फूंकते रहे। 1857 में हुए प्रथम स्वाधीनता संग्राम की असफलता, समयबद्धता के अभाव की कहानी अवश्य है, लेकिन इतिहास का यह पन्ना गौरवशाली इसलिए है कि उस समाज ने अपनी मुट्ठी बांधकर रखी थी। हिन्दुओं और मुसलमानों के उस सामूहिक प्रतिरोध ने अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिये थे। लेकिन इस आंदोलन की विफलता से सबक अंग्रेजों ने लिया और यह समझ लिया कि यदि भारत को गुलाम बनाये रखना है तो इस देश की रीढ़ तोड़नी होगी और हिन्दू-मुसलमान को दो पालों में विभाजित किये रखना होगा। इतिहास गवाह है कि अंग्रेज फिर इसी रास्ते चले और 'फूट डालो, राज करो' की नीति को अपना मंत्र बना लिया। स्वाधीनता संघर्ष के परिदृश्य में जब गांधी प्रवेश करते हैं तो फिरंगियों के इस मंत्र की काट ढूंढ लाते हैं। गांधी तीस करोड़ जनता को इकट्ठा करते हैं और आजादी को जन-जन की जरूरत बना देते हैं। देश के कोने-कोने में आजादी के स्वर गूंज उठते हैं और सभी जातियां, सभी धर्म, सभी संप्रदाय, सभी समुदाय, सभी वर्ग एक स्वर में मांग करते हैं कि हमें आजादी चाहिए। भारतीय समाज की इस बंधी हुई मुट्ठी के आगे जो खड़ा था, वह गांधी था और इस गांधी से जो सबसे पहले डरा, वह ब्रिटिश साम्राज्य था, उस ब्रिटिश साम्राज्य के एजेंट थे। एक लंबा दौर चला, जिसमें हम देखते हैं कि गांधी का जगाया हुआ देश, अंग्रेजों के सामने ताल ठोंककर खड़ा हुआ और अंग्रेजों के एजेंट गांधी को कमजोर करने, उनके कदमों, उनके फैसलों, उनकी नीतियों की आधारहीन निंदा करने और यहां तक कि उनकी हत्या तक करने के अभियान में लगे। गांधी की हत्या के सात कुत्सित प्रयत्न हुए, क्योंकि पश्चिम से आयातित बहुसंख्यकवादी संकीर्ण राष्ट्रवाद की खेती, गांधी के रहते असंभव हो गयी थी। हिन्दू गौरव का भ्रामक मायाजाल रचने वाले मन विषाक्त मन थे। इस मन को हिन्दू-मुस्लिम एकता में सेंध लगानी थी और भारतीय समाज को कमजोर करके अंग्रेजी साम्राज्य को ताकत देनी थी। इसके लिए वे अंग्रेजों से पेंशन तक ले रहे थे।

इतना ही नहीं, गांधी से केवल वे ही नहीं डरते थे, जो गांधी के सिद्धांतों से डरते थे, जो गांधी के आदर्शों से डरते थे और जो जन-मन पर गांधी की नैतिक प्रभाव से डरते थे। बल्कि गांधी से तो वे लोग भी डरने लगे थे, जो गांधी के साथ थे। जब आजादी की ललछौंही दिखने लगी, तब इन लोगों ने भी आजादी के चरखे खूंटियों के हवाले कर दिये और जीवन के अंतिम वर्षों में गांधी खुद को अकेला पाने लगे। गांधी ने कहा भी था कि ये लोग तब मेरे पास आये थे, जब इन्हें तोपों और आधुनिकतम हथियारों से लैस अंग्रेजों से लड़ने का तरीका नहीं मालूम था। लेकिन गांधी तो तय कर चुके थे कि या तो करना है या फिर मरना है। गांधी की आहुति को इन संदर्भों में देखे जाने की जरूरत है। गांधी से डरकर उनकी हत्या कर देने वालों की जमात, भारत की चेतना में व्याप्त गांधी के सूक्ष्म अस्तित्व से भी डरती है और आज तक डर रही हैं। वरना गांधी की तस्वीरों पर गोली मारने के सालाना आयोजन नहीं होते, हत्यारे गोडसे का सार्वजनिक महिमामंडन नहीं होता, अपनी उपस्थिति से संसद तक की मर्यादा तार-तार करने वाले अनेक अपराधों के आरोपी, भारत के राष्ट्रपिता पर सरेआम लांछन न लगा रहे होते। देश के कर्णधार, देश की आजादी के लिए अपना सर कटा देने वाले हजारों, लाखों, जाने-अनजाने मतवालों के बलिदानों का मजाक नहीं उड़ा रहे होते, उनके जुनून को नौटंकी नहीं कह रहे होते।

विषय प्रवेश के बाद अगले वक्ता थे नासिक से आये गांधी विचार के अभ्यासक पराग मांडले। पराग ने कहा कि गांधी से कौन डरता है, इस सवाल का सबसे सटीक जवाब

शायद यही होगा कि हम सब। गांधी हमारी अंतरात्मा के प्रतिबिम्ब हैं। हम चाहे जितने तमाशे कर लें, मगर अपनी अंतरात्मा के सामने हमारा झूठ चलता नहीं है। जब तक अपनी अंतरात्मा का सामना करने से हम डरेंगे, तब तक हम सब गांधी से भी डरते रहेंगे।

यद्यपि गांधी और डर, ये दो पूरी तरह से विरुद्धार्थी शब्द हैं। इस देश के सामाजिक जीवन को एक नैतिक सूत्र से बांधने की कोशिश में गांधी ने जिन एकादश व्रतों का प्रतिपादन किया, उनमें से एक व्रत था – सर्वत्र भय वर्जनम्। यानि किसी भी परिस्थिति में, किसी भी व्यक्ति से भयभीत न होना। इस सर्वत्र भय वर्जनम् का एक गहरा पहलू यह भी था कि जिस तरह से आप किसी से न डरें, वैसे ही किसी को आपसे भी भयभीत नहीं होना चाहिए। सत्य और अहिंसा की दो मशाल थामे गांधी ने ताउम्र इस बात की कोशिश की कि कोई भी उनसे भय महसूस न करे। अपनी तमाम ईमानदार कोशिशों के बावजूद सच यह है कि उनके जीवनकाल में ही न सिर्फ वह अंग्रेजी सत्ता उनसे डरती थी, जिसके साम्राज्य का सूर्य कभी अस्त नहीं होता था, वरन् इस देश के कुछ वर्ग या समुदाय भी उनसे भय खाते थे। उनका यह भय अक्सर गांधी के प्रति घृणा और बैर के रूप में अभिव्यक्त होता था।

गांधी और उन्हें शत्रु या विरोधी मानने वालों के बीच का संघर्ष दरअसल समग्रता और क्षुद्रता के बीच का संघर्ष था। गांधी के पास क्षुद्रता नहीं है, सीमितता नहीं है, व्यापकता है। न वे किसी विशिष्ट धर्म के हित की सोचते हैं, न किसी विशिष्ट जाति के हित की बात करते हैं, न किसी विशिष्ट विचारधारा से बंधते हैं और यहाँ तक कि भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न और संघर्ष करते हुए भी वे केवल देश से न बंधकर वैश्विक हित का विचार करते हैं। उनके विचारों की व्यापकता में इस पृथ्वी के सारे मनुष्य ही नहीं शामिल हैं, वरन् सभी सजीवों और निर्जीवों के साथ संपूर्ण सृष्टि भी शामिल है। इसके अलावा हम यह भी कह सकते हैं कि यह संघर्ष धैर्य और हड़बड़ी के बीच का है, या फिर दूरदृष्टि और लघुदृष्टि के बीच का या फिर इसे प्रेम और घृणा या बैर के बीच के संघर्ष के रूप में भी देखा जा सकता है।

गांधी मुक्त चेतना के प्रतिनिधि हैं। ऐसी मुक्त चेतना के प्रतिनिधि जो धर्म, जाति, वर्ग और देश की सीमाओं में बंध नहीं सकती। जो सर्वव्यापी है, सर्वसमावेशी है। इसलिए जिसे किसी भी आधार पर कोई बाड़ा तैयार करना है, कोई दुकान खड़ी करनी है, उसे गांधी से डर लगता है। गांधी से डर इसलिए लगता है कि गांधी विचार बहुत सरल शब्दों में उनकी तमाम बाड़बंदियों को, तमाम दुकानों को ध्वस्त कर देता है।

पराग मांडले के इस वक्तव्य के बाद वरिष्ठ पत्रकार और कवि विजय किशोर मानव ने भी इस सभा में अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि गांधी से डरने वालों की जमात ने भले ही उनके शरीर को खत्म कर दिया, लेकिन गांधी दो तरह से जीवित बने रहते आये हैं। एक तो उनके अनुयायियों के कारण, जिन्होंने बेशक उन्हें संत बनाकर स्थापित कर दिया है, लेकिन इस तरह से उनका नाम भर याद करके उनके सिद्धांतों को छोड़ने की सुविधा मिल जाती है। उनके जन्मदिन और निर्वाण के दिन राजघाट और ऐसे ही दूसरे स्थानों पर गांधी को सेरीमोनियल ढंग से दूर से याद करने का, सम्मान देते रहने का, सुविधाजनक तरीका हमने अपनाया हुआ है।

लेकिन असल में गांधी को इससे भी अधिक जीवित रखे हुए हैं उनके आलोचक, जो उन्हें भूलने नहीं देते हैं। ये उनके संत होने में कमी निकालते हैं, देश के बंटवारे में उनकी भूमिका पर सवाल उठाते हैं। उनकी अनेक विफलताएं खोज-खोज कर लाते हैं। यह थोड़े-थोड़े समय के बाद नये-नये लोगों द्वारा, नये-नये ढंग से किया जाता है। कभी यह काम ब्रह्मचर्य के उनके प्रयोगों को लेकर उन पर लांछन लगाकर किया जाता है, तो कभी गोडसे का महिमामंडन करके उनके किये सारे पुरुषार्थों और निर्णयों को सवालों के घेरे में खड़ा करके किया जाता है। उनके ऐसे प्रयोगों में शामिल महिलाओं ने उस प्रसंग पर पुस्तकों में सच लिखा है, उसे कोई सामने नहीं लाता।

आपको नहीं लगता कि ये सारे आक्षेप उस दौर के हमारे इतिहास पर कीचड़ की तरह हैं? जिसके मूल में भय है? सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आज ये आलोचक अपने महापुरुषों से अधिक, आजादी के आंदोलन से जुड़े अनेक महापुरुषों को दूसरे दलों से छीनने के लिए सब कुछ करते हैं। इनमें सबसे ऊपर गांधी होते हैं। अंबेडकर, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लाल बहादुर शास्त्री और राममनोहर लोहिया जैसे अनेक नेताओं को अपने खाते में डालने में ये कोई कसर नहीं छोड़ते। इसका कारण यह भी है कि उनके पास गौरवशाली अतीत वाले महापुरुष नहीं हैं। आजादी के आंदोलन में अनुपस्थित रहने के कारण उनका वह खाना खाली है। आधे-अधूरे गांधी को शो केस करने के पीछे उन्हें अप्रासंगिक बनाने का प्रयास है।

कानपुर के निवासी कथा-साहित्यकार प्रियंवद ने कम बोला लेकिन जो बोला, उसका सारांश ये है कि गांधी से वे ही डरते हैं, जो चंद सिक्कों के लिए अपना मान, अपनी अंतरात्मा बेच देते हैं। गांधी उस व्यक्ति का नाम है, जो सघन निराशा के गहन अंधेरे में भी आशावान बने रहने के गुर सिखाता है। पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी का संबोधन सत्र का अंतिम संबोधन था। चर्चा का समारोप करते हुए उन्होंने कहा कि गांधी का आना भारतीय समाज में आधुनिकता का आना था। गांधी भारत की गरीब और अंतिम जन की चेतना के प्रतीक पुरुष हैं। गांधी का महत्त्व बीतते हुए वक्त के साथ बढ़ता जाता है। दुनिया भर में उनके लिए लिखा और पढ़ा जा रहा है। वास्तव में गांधी दर्शन और शोध का विषय है। उन्होंने कहा कि गांधी एक प्रतिध्वनि है, जो मौजूद है और जो सुनी जा सकती है। गांधी के व्यक्तित्व के अनेक पहलू अनछुए रह गये हैं। यह उनकी विराटता थी कि वे साधारण से काम को भी असाधारण बना देते थे। हरिद्वार में उन्होंने गंगा स्नान करते हुए जनेऊ का यह कहते हुए परित्याग कर दिया कि जब तक महिलाओं और वंचितों के लिए जनेऊ स्वीकार्य नहीं होता, वे इसे नहीं पहनेंगे।

लीलाधर जगूड़ी के समापन-संबोधन के बाद एक खुला सत्र हुआ जिसमें श्रोताओं की तरफ से सवाल पूछे गये। कानपुर के युवा और चर्चित कवि पंकज चतुर्वेदी, झांसी की कवयित्री निधि अग्रवाल और कानपुर के ही आंकोलाजिस्ट डॉ. ए. के. दीक्षित ने सवाल किये। डॉ. दीक्षित ने पूछा कि यदि आज गांधीजी होते तो शाहीनबाग से कैसे निपटते? जवाब पराग मांडले ने दिया। उन्होंने कहा कि गांधी का नाम साम्राज्यवादी सत्ता के विरुद्ध खड़ी एक विलक्षण अहिंसक शक्ति का नाम है। गांधी स्वयं आंदोलनकारी थे। वे आंदोलनकारियों से नहीं, सत्ता से निपटते। गांधी यदि आज होते तो खुद शाहीनबाग में होते।

–सर्वोदय जगत डेस्क

समापन किश्त...

उन्हें मापने का हमारा पैमाना छोटा है

गांधीजी के बारे में प्रचलित भ्रांतियां और उनके निवारण

❑ नारायण देसाई

देश के बंटवारे के लिए गांधी जिम्मेवार थे?

इस तरह की गलतफहमी गांधीजी की हत्या के बाद सुनियोजित रूप से फैलाने की कोशिश की गई है। गांधीजी की हत्या के बाद संगठित रूप से इस तरह की गलतफहमी फैलाने वाले, उनके जीते-जी सार्वजनिक रूप से इस विषय की चर्चा करने से बचते थे। इस दुनिया से उनके जाने के बाद भी इस बारे में सार्वजनिक चर्चा को टालते थे। हां, एक बार अटल बिहारी वाजपेयी ने, जब वह मोरारजी देसाई के मंत्रिमंडल में विदेशमंत्री थे, गांधी शांति प्रतिष्ठान के सभागार में आयोजित एक सभा में अध्यक्ष के रूप में बोलते हुए कहा था कि 'हम लोग भी बहुत दिनों तक यही मानते रहे कि देश के बंटवारे के लिए गांधीजी जिम्मेवार थे। लेकिन इमरजेंसी के दौरान जेल में अध्ययन का मौका मिला, तब हमें समझ में आया कि बंटवारे के लिए गांधीजी नहीं, बल्कि दूसरे लोग जिम्मेवार थे।'

देश-विभाजन के विचार को 1940 से 1945 तक किसी ने निरंतर समर्थन दिया तो वह मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व वाली मुस्लिम लीग थी। माउंटबेटन वाइसराय के रूप में भारत आए, तो उन्हें भारत से ब्रिटिश हुकूमत की विदाई के आदेश पर अमल करना था। वैसा करने में यदि देश का बंटवारा अनिवार्य लगे तो माउंटबेटन को वैसा करके 1948 के जून माह तक भारत से ब्रिटिश हुकूमत का बोरिया-बिस्तर समेट लेने का आदेश मिला था।

कांग्रेस विभाजन के खिलाफ थी। पर उसे रोकने के उद्यम में अगर देश में तकरार बढ़े तो उससे निपटने की कांग्रेस के नेताओं की तैयारी भी नहीं थी। मुस्लिम लीग बंटवारे की अपनी मंशा पूरी करने के लिए झगड़े-फसाद मोल लेने को तैयार थी। बंटवारा न हो और यथास्थिति जारी रहे तो गांधीजी कांग्रेस को साथ लेकर एक और अहिंसक लड़ाई लड़ने को तैयार थे। गांधीजी पंजाब और बंगाल के भी विभाजन के विरुद्ध थे। इन दोनों प्रांतों में तब मुस्लिम लीग की सरकारें थीं, जिनके साथ हिन्दू महासभा का गठबंधन था। 1940 में मुस्लिम लीग और 1943 में सिंध की मुस्लिम लीग सरकार पाकिस्तान का प्रस्ताव पास कर चुकी थी। गांधीजी को यह दिख रहा था कि इस विचार को मान लेने का अर्थ होगा पूरे देश के विभाजन के तर्क को मान लेना।

बंटवारे के कारण जान-माल का भयानक नुकसान इन दो प्रांतों में ही हुआ था। स्वराज मिलने के तेरह साल बाद दो प्रसिद्ध पत्रकारों के सामने माउंटबेटन ने यह कबूल किया था कि आबादी की अदला-बदली में ऐसी भयानक मार-काट मचेगी, इसकी कल्पना उस समय पंजाब, बंगाल और उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रांत के अंग्रेज गवर्नरों को नहीं थी। जिन्ना और लियाकत अली खान को भी नहीं थी। नेहरू और पटेल को भी नहीं थी। सिर्फ और सिर्फ एक व्यक्ति ने उन्हें इस विनाश के बारे में चेताया था, और वह थे गांधीजी।

दो प्रांतों के बंटवारे समेत देश के विभाजन के फैसले पर दस्तखत होने के बाद ही इसके बारे में गांधीजी को जानकारी दी गई थी। उसके बाद भी गांधीजी ने जो सुझाव दिया था, वह विभाजन की योजना को अवरुद्ध कर सकने वाला था। उन्होंने कहा था कि अब तो विभाजन का सिद्धांत स्वीकार कर लिया गया है। अब बंटवारा किस तरह से हो और कौन-से मापदंड लागू किए जाएं, यह सब तय करते समय अंग्रेज बीच में न रहें। दोनों तरफ के नेता साथ बैठकर आपस में यह सब तय करें। लेकिन गांधीजी के इस प्रस्ताव को किसी ने नहीं माना।

गांधीजी के साथ चर्चा करने की पेशकश टालकर, उनकी जान लेकर अपनी बात सिद्ध करने का प्रयत्न करने वालों को क्या कहेंगे? अदालत में हत्यारे की मुख्य दलील यह थी कि गांधाजी मुसलमानों का पक्ष लेते थे और हिंदुओं के प्रति अन्याय करते थे। लेकिन सच्चाई यह है कि जो भी हिंसा का शिकार हुआ, गांधीजी उसके साथ थे। उनका समर्थन किसी एक कौम के प्रति नहीं था। गांधीजी हमेशा मुसलमानों का ही पक्ष लेते थे, यह कहने वाले बड़ी सुविधा से यह बात भूल जाते हैं कि नोआखाली में कौन किसको मार रहा था। नोआखाली में हिंदू ही पीड़ित थे। गांधीजी उनके आंसू पोंछने और उन्हें निर्भयता का पाठ पढ़ाने के लिए भयानक कष्ट और खतरे उठाकर वहां घूम रहे थे। बिहार में तस्वीर उल्टी थी। वहां हिंसा और क्रूरता के शिकार मुसलमान हुए थे। इसलिए वहां गांधीजी की सहानुभूति उनके साथ थी।

गांधीजी ने 1948 में दिल्ली में उपवास किया, तो उपवास छोड़ने की शर्तों में एक शर्त यह थी कि विभाजन के समय संसाधनों के बंटवारे के सिलसिले में हुए निर्णय के मुताबिक भारत पाकिस्तान को 55 करोड़ रु. देगा। एक अंतरराष्ट्रीय करार का पालन न होने से देश की बदनामी होगी, गांधीजी को इसकी चिंता थी। लेकिन गांधीजी की हत्या का समर्थन करने वाले तो इस बात को यहां तक खींच ले जाते हैं कि इसी कारण से उनकी हत्या की गई थी। ऐसी दलील देने वालों को यह नहीं भूलना चाहिए कि 55 करोड़ की बात तो गांधीजी की हत्या के कुछ दिन पहले ही उठी थी। जबकि गांधीजी की हत्या के प्रयास तो बरसों से चल रहे थे।

30 जनवरी 1948 के दिन जो कृत्य किया गया, उसके पीछे मात्र एक घटना से उपजा आवेश नहीं था, बल्कि वर्षों से ठंडे दिमाग से रचे गए षड्यंत्र का परिणाम था। यह भी याद रहे कि आखिरी चौदह वर्षों में गांधीजी की हत्या के कम-से-कम सात प्रयास हुए और उनमें से तीन में गोडसे बढ़-चढ़ कर शामिल था। यह भी नहीं भुलाया जाना चाहिए कि जब गांधीजी ने सवा सौ साल जीने की इच्छा जताई थी, तब उनकी इस इच्छा का जिक्र करते हुए 'अग्रणी' नामक मराठी पत्रिका के संपादक ने यह टिप्पणी की थी कि 'पर उन्हें जीने देगा कौन?' वह संपादक और ऐसी टिप्पणी लिखने वाला और कोई नहीं, हत्यारा खुद ही था।

गांधीजी ने जवाहरलाल को प्रधानमंत्री बनाकर भूल की थी?

गांधीजी के जाने के बाद उनके एक गलत निर्णय के रूप में यह चर्चा होती रही है कि गांधीजी ने सरदार पटेल के बदले जवाहरलाल जी को देश का प्रधानमंत्री बनाया। ऐसा कहने वाले लोग यह बात तो समझते ही होंगे कि गांधीजी ने किसी को प्रधानमंत्री नहीं बनाया था। वास्तविकता यह थी कि 1946 के बाद कांग्रेस में गांधीजी की चलती ही नहीं थी। 'मेरी सुनता कौन है?' जैसे दुखोद्गार भी उन दिनों उन्होंने सार्वजनिक रूप से व्यक्त किए थे। लेकिन उस बात को अलग रखकर भी हम उपर्युक्त प्रश्न पर विचार कर सकते हैं। इस संबंध में अलग-अलग लेखकों ने अलग-अलग जवाब पेश किए हैं। अंतिम समाधान तो अगर गांधीजी हमारे बीच होते, तो ही मिल पाता।

(मूल गुजराती से हिन्दी अनुवाद राजेन्द्र राजन)

धारावाहिक

बा
मृत्यु शय्या पर

❑ गिरिराज किशोर

पहला गिरमिटिया जैसा चर्चित उपन्यास प्रस्तुत कर चुके गिरिराज किशोर ने जब बा पर कलम उठायी, तो बा पर कुछ भी लिखना बहुत कठिन था। उनके बारे में उपलब्ध जानकारियां नहीं के बराबर थीं। 'पहला गिरमिटिया' की सामग्री जुटाने में उन्हें कोई दो हजार पुस्तकों से मदद मिली थी, वहीं 'बा' उपन्यास लिखते समय मुश्किल से दो पुस्तकें उनके सामने थीं। वे उन सब लोगों से मिले, जिन्हें कस्तूरबा के बारे में थोड़ी-सी भी जानकारी थी और उन सब जगहों पर गये, जहां बा ने थोड़ा या बहुत समय बिताया था। इस तरह बनी यह कथा, यह इतिहास बा के अलावा खुद बापू के दो और रूपों को भी सामने रखता है–पति और पिता का रूप। प्रस्तुत है 'बा' का अगला अंश, जो बा-बापू : 150 के अवसर पर क्रमशः प्रकाशित हो रहा है। हम इस धारावाहिक की समापन किश्त की तरफ बढ़ रहे हैं। अब कुछ ही अध्याय शेष हैं। इसी बीच इस उपन्यास के लेखक गिरिराज किशोर के स्वर्गवास की खबर भी आयी है। 9 फरवरी की भोर में उनका निधन हो गया। 'बा' की इस कड़ी के साथ-साथ हम गिरिराज जी के सम्मान में अपने श्रद्धा-सुमन भी अर्पित करते हैं। –सं.

संध्या उतर आयी थी। कई बार रोगी को समय-भ्रम होने लगता है। वहीं सुबह को शाम और शाम को सुबह समझने लगता है। बा ने पूछा, 'क्या सुबह हो गयी?'

'नहीं बा, अभी तो शाम है।'

तभी देवदास, हरिलाल की बेटी मनु और संतोक बेन आ पहुंचे। बा उन्हें देखकर रो पड़ी। हरिलाल के कारण बा पहले से दुखी थी। दिन में दो-तीन बार किसी न किसी संदर्भ में याद करके उदास हो जाती थी। देवदास से बोली, 'देख भाई, जब तक संभला, मैंने संभाला, अब तू संभालना। बापू जी तो साधु हैं। उन्हें दुनिया की चिन्ता है...हरिलाल को तू जानता ही है, उसके परिवार को भी तुझे ही देखना है।'

मनु ने बा को भजन सुनाये। बा चाहती थी कि मनु और संतोक बहन रात को बा के पास ही सोयें, लेकिन अनुमति नहीं मिली। केवल देवदास को स्वीकृति मिल पायी। जब तक देवदास उन सबको बाहर तक छोड़कर आया, बा सुशीला की गोद में सिर रखकर सो चुकी थी। यह नींद ताजगी देने वाली नींद नहीं थी। पेशाब ठीक से न होने के कारण अर्ध बेहोशी सी रहने लगी थी। रात को साढ़े ग्यारह बजे जब बा की आंख खुली तो प्रभावती बहन बैठी थी। बा को जोर से खांसी आयी। सुशीला दवा लेकर बा के पास पहुंची, लेकिन उन्होंने दवा लेने से मना कर दिया। बा की खाट के पास बदबू महसूस हुई। बत्ती जलाकर देखा तो बिस्तर गंदा हो गया था, बा को पता नहीं चला था। कपड़े बदलकर उन्हें खाट पर लिटा दिया। सुशीला समझ रही थी कि अब बा का अंतिम समय आ रहा है। देवदास भी आ गया। वह उसी तरह खड़े-खड़े उनकी सेवा में लग गया। उनका सिर दबाता रहा। जब लगा, बा सो गयी तो सिर दबाना बंद कर दिया। बा ने सुशीला का नाम लेकर कहा, 'क्या तू भी थक गयी?'

'मैं क्यों थकूंगी, बा?' सुशीला सिर दबाने लगी। बा के सिर में दर्द भी था और चक्कर भी आ रहे थे। यूरीमिया के लक्षण नजर आ रहे थे। सुशीला तीन बजे सोने के लिए उठी। पांच बजे तक देवदास एक पैर पर सेवा में खड़ा रहा। शायद यही सोचकर कि बा का अंतिम समय पता नहीं कब आ जाये। वह मन ही मन रो रहा था। पिछली रात आशंकाओं से भरी थी।

22 फरवरी, 1944

सुशीला रात-भर जागी थी। सवेरे सात बजे उठकर मुंह धो रही थी। बा ने पुकारा, 'सुशीला...'

'हां, बा...' वह पास आकर बोली।

'मुझे घर ले चल, मेरा साज-संवार कर दे...' आवाज में कम्पन आ गया था। सुशीला

ने उनको राम का प्यारा चित्र दिखाकर कहा, 'आप तो अपने घर में ही हैं, यह देखिये आपका प्यारा चित्र...'

'मुझे बापू जी के पास ले चल।'

'आप बापू के कमरे में ही तो हैं।' उसे लगा कि बा, बापू जी को पास बुलाना चाहती हैं। वे बराबर के कमरे में नाश्ता कर रहे थे। उसने कहला दिया, घूमने जाने से पहले बा के पास होते जायें। बापू हंसते-हंसते आये। बा की चारपाई के आसपास साथी संबंधी खड़े थे। कहने लगे, 'तुझे लगा होगा कि इतने सारे सगे-संबंधियों के आ जाने से मैंने तुझे छोड़ दिया, है ना!' कहकर बापू चुपचाप चारपाई पर बैठ गये। बा सुशीला की गोद में सिर रख के लेटी हुई थी। एकाएक बोली, 'कहां जायेंगे, क्या मर जायेंगे?' पहले जब मरने जीने की बात करती थी, तो सुशीला यह कहकर समझाती थी कि ऐसा क्यों सोचती हो, सब साथ-साथ ही घर जायेंगे। इस बार उसने कहा, 'बा, एक दिन आगे पीछे सबको जाना है, उसकी चिन्ता क्या करनी?' बा ने हुंकारी भर दी।

थोड़ी देर बाद बापू ने पूछा, 'मैं घूम आऊं?' बा पहले स्वयं घूमने चलने के लिए कहती थी। इस बार मना कर दिया। वे फिर खाट पर बैठ गये। बा उनका सहारा लिये और आंखें बंद किये लेटी रही। बोली, 'हमने बहुत सुख-दुख भोगे हैं। मेरे लिए कोई न रोये, अब मुझे शांति है।' दोनों के चेहरों पर अपूर्व शांति और संतोष था। इस दिव्य दृश्य को पहले सब देखते रहे, फिर धीरे से बाहर चले गये। बापू दस बजे तक उसी तरह बैठे रहे। बीच-बीच में बा से कहते जाते, राम नाम कहती रहो। वही

सबसे बड़ा सहारा है। बा को खांसी आती तो बापू सहला देते थे। बा के चेहरे से लगता था कि उनको अच्छा लग रहा है।

सरकार चाहती तो बा को छोड़ सकती थी, पर छोड़ नहीं रही थी। सरकार सोचती थी कि बाहर जाने पर बा की तबीयत अधिक गंभीर हुई तो जनता सरकार को अत्याचारी समझेगी। यह बात ब्रिटिश सरकार के किसी अफसर ने देवदास को बतायी थी।

बा ने बापू को दस बजे जाने दिया। उनके जाने के बाद सुशीला उनके स्थान पर बैठ गयी। बा बीच-बीच में कुछ कुछ बोलती जाती थी। पहला दिन था, जब बा ने दातून वगैरह कुछ नहीं किया था। बोरो ग्लिसरीन से मुंह साफ करने के लिए पूछा तो मना कर दिया। बा ने बीच-बीच में बड़बड़ाती थी, क्या मर जायेंगे। मौत का ऐसा खौफ पहले कभी नहीं देखा था। बा नहीं, मौत अपनी आमद का संकेत दे रही थी। सुशीला को घबराहट हुई।

कलकत्ता से पेन्सिलिन हवाई जहाज से मंगवाई गयी थी। ब्रिटिश सरकार हर मुमकिन सहायता कर रही थी। कर्नल शाह और कर्नल भंडारी ने इस बारे में सूचित किया। लेकिन बापू ने सब दवाइयां बंद कर दी थीं। दवाई खाकर ठीक होने की बा की लालसा भी समाप्त हो चुकी थी। देवदास दवा देने के पक्ष में था। कर्नल भंडारी ने बापू की राय जाननी चाही। बापू ने कहा, 'मैं दवा देने के पक्ष में नहीं, मेरे लड़के और रिश्तेदार चाहते हैं, तो सरकार को अनुमति दे देनी चाहिए।'

बा की नाड़ी अनियमित चल रही थी। बीच-बीच में लगता था कि गायब हो गयी, फिर चलने लगती थी। सुशीला रात-भर जागी थी, सवेरे प्रभावती बेन को बैठाकर नहाने गयी। नहाकर आयी तो बापू ने कहा कि तुझे कम से कम पन्द्रह मिनट तो घूमना चाहिए। वह बापू की बात मानकर घूमने चली गयी, पर रास्ते भर प्रार्थना करती रही। कहती रही, 'क्या तुम मेरी बा को नहीं बचा सकते?' फिर अपने आप ही जवाब भी देती कि क्या, कब उचित है, तुम ही जानते हो। इस स्वतंत्रता संग्राम में बिरलों को ही शहादत का अवसर मिलता है। यह अवसर बा जैसी तपस्विनी को प्राप्त नहीं होगा, तो किसे होगा। गोली खाकर मरना या इस तरह जेल में मरना एक समान है। ईश्वर जो पद बा को प्रदान करने जा रहा है, वह मेरे जैसे मोहग्रस्त प्राणी की प्रार्थना से थोड़े ही बदल देगा। जैसी तेरी मर्जी।

सुशीला ने घड़ी देखी तो बापू के दिये पंद्रह मिनट समाप्त हो रहे थे। वह लौट पड़ी। बापू की दिनचर्या भी बदल गयी थी। कई दिन से खाने में तरल पदार्थ का ही सेवन कर रहे थे। बीमारी का इतना दबाव था कि खाने में परिवर्तन किये बिना वे अपनी तबीयत ठीक नहीं रख सकते थे। खाना-पीना आध-पौन घंटे की जगह दस मिनट में समाप्त करके बा के पास आ बैठते थे। बापू अपना जरूरी काम निपटाकर ही आते थे, जिससे वे निरंतर बा के पास बने रहे। सुशीला लौटी तो बापू वहां मौजूद थे। बा एकाएक सीधी लेट गयी। दमे के कारण महीनों से सीधा लेटना संभव नहीं हुआ था। या तो पीठ किसी के सहारे टिकाकर लेटती थी या फिर सामने मेज पर सिर टिकाकर बैठ जाती थी। उन्होंने सीधा लेटने के बारे में देवदास को सूचना दी। सूचना मिलते ही देवदास और मनु वहां पहुंच गये। डॉ. दिनशा मेहता भी आ गये। बापू ने पूछा, रामधुन सुनोगी? बा ने गर्दन हिला दी। बापू ने बराबर वाले कमरे में गीता का सस्वर पाठ आरंभ करा दिया। देवदास, प्यारेलाल और कनु बारी-बारी से पाठ कर रहे थे, जिससे बा के कानों तक आवाज पहुंचती रहे।

रात को पानी पीने में कष्ट होने लगा। इच्छा भी नहीं हो रही थी। दोपहर को देवदास गंगाजल लाया। उसमें तुलसी दल डाला। बा एकटक तुलसी के बिरवे को देख रही थी। सुशीला समझ गयी, उसने बिरवा उनके पास लाकर स्टूल पर रख दिया। बापू जी ने कहा, देवदास ने गंगाजल बा के मुंह में डाल दिया। बा झट से पी गयी। फिर मुंह खोला, बापू ने एक चम्मच और डाल दिया और कहा, अब थोड़ी देर बाद। बा बीच-बीच में गंगाजी पुकारती थी। जब पुकारती थी तो बिरवे की ओर देख लेती थी। बापू दूसरे संबंधियों को समय देने के लिए अपनी गद्दी पर जाकर बैठ गये। थोड़ी देर बाद रामी (हरिलाल की बड़ी बेटी) के साथ केशू भाई भी आ गये। उन्हें देखते ही बा उठकर बैठ गयी। पता नहीं कहां से शक्ति आ गयी। बोली, 'देवदास ने बहुत सेवा की है।'

'बा, मैंने क्या सेवा की है, मैं तो कल रात ही आया हूं। सेवा तो इन सब साथियों ने की है।' थोड़ा रुककर बताया, 'रामदास भाई भी आ रहे हैं।'

'वह आकर क्या करेगा?' रामदास को परेशान करना बा को अच्छा नहीं लगता था। इसके बाद वह आंखें बंद करके लेट गयी। मद्धिम स्वर में हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी, 'हे भगवान, ढोर की तरह खाया, माफ करना। अब तेरा प्रेम और भक्ति चाहिए।' चेहरे पर शांति का भाव झलक रहा था, जैसे प्रार्थना सुन ली गयी हो। चेहरे पर विरक्ति का भाव आ गया था।

कनु गांधी ने बा के कई फोटो लिये। कनु के साथ घर के सभी लोग चाहते थे कि बा के साथ बापू का इस हालत में फोटो खींच लिया जाये। बापू को फोटो खिंचवाने के लिए बैठना पसंद नहीं था। बापू सबसे कहते रहते थे, सबको बीच-बीच में आराम करते रहना चाहिए। इसी बात को आधार बनाकर सुशीला ने कहा, 'बापू जी, मैं थोड़ा आराम करने जाती हूं, आप बा की जिम्मेदारी ले लें। सुशीला को आशा थी कि जैसे ही बापू बा के पास बैठेंगे, कनु चुपचाप फोटो ले लेगा। बापू भी जैसे समझ रहे थे, बोले, 'चार्ज तो मैं यहीं बैठे-बैठे ले लेता हूं। दूसरे सब अतिथि जो यहां बैठे हैं, बैठे रहने दो। बा बुलायेगी तो उसके पास चला जाऊंगा।' दोनों के चेहरे उतर गये।

साढ़े पांच बजे कर्नल शाह और कर्नल भंडारी पेन्सिलिन के इंजेक्शन लेकर आये। बापू से पूछा। उन्होंने तटस्थ भाव से कहा, 'डॉ. गिल्डर और सुशीला देना चाहें तो दे दें।' देवदास पहले से ही इस मत के थे कि पेन्सिलिन दी जाये। दो अहम सवाल थे। एक था, मृत्यु शैया पर पड़ी बा को अब सुइयों से चीथने से क्या लाभ! बापू का मत भी यही था। दूसरा मत था कि जब तक सांस, तब तक आस। यह सामान्य और डॉक्टरी पक्ष था। पेन्सिलिन तब चली ही चली थी। वह जीवन बचाऊ दवा समझी जाती थी। डॉ. गिल्डर ने इशारा किया तो सुशीला सिरिंज उबालने लगी। सुशीला से बापू ने पूछा, 'तो तुम सबने तय कर लिया, तुम मानते हो कि इससे फायदा होगा?' सुशीला खामोश रही।

...क्रमश : अगले अंक में

लोक-विमर्श

ब्रिटेन में फेल हो गया रेलवे का निजीकरण

भारत में रेलवे का निजीकरण हो रहा है। वहीं 1980 के दशक में रेलवे को निजी करने वाले ब्रिटेन में यह पूरी तरह फेल हो गया है। एक के बाद एक लाइनों को वापस राष्ट्रीयकृत करना पड़ रहा है, क्योंकि निजी पूंजीपतियों ने महंगे किरायों पर मुनाफा लूटकर रेल सेवाओं के ढांचे को ही बरबाद कर दिया है। अब एक मार्च से मैंचेस्टर-लिवरपूल क्षेत्र की नॉर्दर्न रेल को सरकार अपने हाथों में ले रही है।

यह बात ब्रिटेन की है, पर कहानी दुनिया भर की है। ब्रिटेन में मारग्रेट थैचर ने रेल का निजीकरण किया था। अब उसी कंजरवेटिव पार्टी की टेरेजा सरकार वापस उसका राष्ट्रीयकरण कर रही है। जब निजीकरण हुआ तो, बनी-बनाई रेलवे लाइनें, रेलगाड़ियां और पूरा ढांचा निजी क्षेत्र को बिना इकन्नी खर्च हुए मिला। उन्हें बस सालाना शुल्क देना था।

उन्होंने कुछ साल में ही भाड़ा तीन गुना बढ़ा दिया, पर उन्हें हमेशा 'घाटा' ही होता रहा! सरकार उन्हें और रियायतें देती रही, पर घाटा होता रहा, भाड़ा बढ़ता रहा। कमाल की बात ये है कि वे घाटे के बावजूद भी 'देश सेवा' में रेल को चलाते रहे, और इतने घाटे के बावजूद भी निजी क्षेत्र के मालिक और भी दौलतमंद बनते गए। इन्हीं मालिकों में से एक रिचर्ड ब्रांसन है, जिसकी वर्जिन एयरलाइन के बारे में भारत में भी बहुत से लोग वाकिफ हैं। ब्रांसन की कंपनी भी लंदन से लीड्स, न्यूकैसल, ग्लासगो की पूर्वी तटीय रेल को 'घाटे' में चलाती रही और ब्रांसन 'घाटे' में रहते हुए भी जमीन से आसमान में नए-नए कारोबार शुरू करता रहा और अमीर बनता गया।

कुछ दिन पूर्व अचानक ब्रांसन ने ऐलान कर दिया कि अब उसे और घाटा बर्दाश्त नहीं, इसलिए अब वह शुल्क नहीं दे सकता। तो सरकार ने क्या किया? आज उस कंपनी का राष्ट्रीयकरण हो गया है। कंपनी को उसकी सारी देनदारियों समेत सरकार ने ले लिया है। यहां तक कि कंपनी के सारे प्रबंधक उन्हीं पदों और वेतन पर बने रहे।

जब तक कारोबार में दिखावटी घाटे के बावजूद मलाई मौजूद थी, कंपनी निजी रही। जब मलाई खत्म हुई और असली वाला घाटा शुरू हुआ तो घाटे का 'राष्ट्रीयकरण' कर दिया गया। कमाल की बात यह कि लंदन से बर्मिंघम, मैंचेस्टर, लिवरपुल की पश्चिम तट रेल भी ब्रांसन की ही दूसरे नाम की कंपनी के पास है, पर उसका राष्ट्रीयकरण नहीं हुआ, क्योंकि ब्रांसन ने उसे चलाने से मना नहीं किया, (वहां अभी मलाई की गुंजाइश बाकी है) अर्थात कौन कंपनी निजी रहे, किसका राष्ट्रीयकरण हो यह ब्रांसन तय कर रहा है। सरकार सिर्फ फैसले पर अमल कर रही है।

यही पूंजीवाद में निजीकरण-राष्ट्रीयकरण की नीति का मूल है। जब पूंजीपतियों को निजीकरण से लाभ हो, तो सरकारें प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देने के नाम पर निजीकरण करने लगती हैं; जब पूंजीपतियों को राष्ट्रीयकरण में फायदा दिखे, तो सरकारें 'समाजवाद' और 'कल्याण' की बातें करने लगती हैं। दुनिया भर के संसदीय प्रतिनिधि इसी को 'शांतिपूर्ण रास्ते से समाजवाद' की ओर अग्रसर होना बताकर वाह-वाह में जुट जाते हैं।' **-मुकेश असीम**

सीएए और एनआरसी के खिलाफ प्रस्ताव पारित करने वाला पहला गांव

देश में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) लागू होने के बाद पूरे देश में इसके खिलाफ प्रदर्शन चल रहे हैं. केरल, राजस्थान और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों की विधानसभाओं से इस कानून के खिलाफ प्रस्ताव पारित हो चुके हैं. वहीं अब एक गांव से भी सीएए और राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनआरसी) के खिलाफ प्रस्ताव पारित किए जाने की खबर है. महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के इस्लाक गांव में गणतंत्र दिवस के दिन 26 जनवरी को हुई ग्राम पंचायत की बैठक में सीएए और एनआरसी के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया गया. इस प्रस्ताव पर सरपंच और उप सरपंच ने हस्ताक्षर किए, जिसके बाद इसे जिला प्रशासन को भेज दिया गया. अहमदनगर शहर के करीब स्थित इस गांव की आबादी लगभग दो हजार है. हालांकि यहां मुस्लिम आबादी शून्य है.

इस संबंध में गांव के सरपंच बाबासाहेब गोरांगे ने कहा कि गांव की अधिकांश आबादी मध्यम वर्ग के छोटे किसानों की है. काफी लोगों के पास अपनी जमीन नहीं है और न ही कोई पुराना कागज है, जिससे ये अपनी नागरिकता सिद्ध कर सकें. उन्होंने कहा कि पीढ़ियों पहले से रह रही ऐसे लोगों की आबादी के लिए नागरिकता साबित करना लगभग नामुमकिन है. सरपंच ने गांव में मुस्लिम आबादी को शून्य बताते हुए कहा कि यह प्रस्ताव पूरी तरह से मानवीय आधार पर पारित किया गया है.

खुद भी छोटे किसान सरपंच गोरांगे ने बताया कि दस्तावेजों के अभाव में गांव की बड़ी आबादी सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाती है. गणतंत्र दिवस के दिन हुई ग्राम सभा की बैठक के दौरान ग्राम पंचायत के सदस्यों ने ग्रामीणों को यह कानून लागू किए जाने पर होने वाली समस्याएं बताईं. इसके बाद इस पर चर्चा हुई और फिर एनआरसी के साथ ही राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) लागू किए जाने पर असहयोग का प्रस्ताव पारित कर दिया गया. ❑

पहला गिरमिटिया के लेखक गिरिराज किशोर नहीं रहे

जिला सर्वोदय मण्डल उन्नाव ने जिला कार्यालय में प्रसिद्ध गांधीवादी, वरिष्ठ साहित्यकार व महान विचारक गिरिराज किशोर के आकस्मिक निधन पर शोक सभा आयोजित की। इस अवसर पर जिला संयोजक नसीर भाई, पूर्व संयोजक रामशंकर जी, मंत्री संजीव भाई, गांधी शांति प्रतिष्ठान कानपुर के संयोजक बिंदा भाई, जन स्वाध्याय अभियान के प्रदेश संयोजक रघुराज सिंह 'मगन', उप संयोजक रामसजीवन, कोषाध्यक्ष आलोक, सुशील, अनुपम भाई, सीताराम, रमेश गौतम, शोभा महेश, मुकेश यादव, अखिलेश, मजहर आदि लोग मौजूद रहे। ज्ञात हो कि गिरिराज जी का दिनांक 9/02/2020 को सुबह देहावसान हो गया है। उनका गांधी जी पर लिखा उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' और कस्तूरबा गांधी पर लिखा उपन्यास 'बा' बहुत प्रसिद्ध हुए। उनके जाने से सभी गांधीवादियों एवं साहित्यकारों व कवियों मे शोक की लहर फैल गयी है। गूंज अनुगूँज साहित्यक संस्था ने भी आज अपनी मासिक काव्य गोष्ठी में उनके निधन पर दुख व्यक्त करते हुए दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। **–रघुराज सिंह 'मगन'**

सर्वोदय दिवस पर रैली और मिलन समारोह

सर्वोदय दिवस के अवसर पर धेमाजी में असम सर्वोदय मंडल द्वारा एक रैली तथा मिलन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें असम के विभिन्न जिलों से सर्वोदय कार्यकर्ता तथा विनोबा जी द्वारा स्थापित मैत्री आश्रम की बहनें शामिल हुईं। मिलन समारोह को सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष महादेव विद्रोही तथा असम सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष भीमकांत कोंवर आदि ने संबोधित किया। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष महादेव विद्रोही ने देश में जगह-जगह तोड़ी जा रही गांधी प्रतिमाओं के प्रति अपना गहरा आक्रोश व्यक्त किया और ऐसे असामाजिक तत्त्वों के विरुद्ध सरकार से विधिसम्मत कार्रवाई करने की मांग की। उन्होंने असम भूदान बोर्ड का गठन न किये जाने पर असम सरकार की आलोचना की और कहा कि भूदान बोर्ड के अभाव में भूदान के काम बिखरे पड़े हैं। उन्होंने यथाशीघ्र बोर्ड के गठन की मांग की।

कार्यक्रम में जुगदत्त, डॉ. कौण्डिन्य, लामीदत्त, तुलसी बरगोहाईं तथा ग्रामदानी गांव बरबाम डीहिंगिया को लुदुरी देवी कोंवर स्मारक सर्वोदय सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया गया। कार्यकर्ताओं की ओर से सूतांजलि में 19 गुंडी सूत तथा 793 रुपये दान में आये। कार्यक्रम से पहले सर्व सेवा संघ अध्यक्ष महादेव विद्रोही के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं की टीम ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कुशल कोंवर के डिब्रूगढ़ स्थित स्मारक पर जाकर शहीद को अपनी श्रद्धांजलि भी दी। कुशल कोंवर को जोरहट सेंट्रल जेल में 15 जून 1943 को अंग्रेज सरकार ने फांसी दे दी थी।

–भीमकांत कोंवर

संघर्ष यात्रा पर हमला

एनपीआर, एनआरसी, सीएए विरोधी संघर्ष मोर्चा द्वारा गांधी आश्रम भितिहरवा से 30 जनवरी, 2020 को 'बापू धाम' से 'गांधी मैदान' तक देश हमारा संविधान, जन गन मन यात्रा' पर मलिकपुर बाज़ार, सुपौल में भाजपा के करीब पचास लोगों द्वारा पथराव कर कायराना हमला किया गया। हमलावरों के हाथों में काला झंडा भी था और वह 'देश के गद्दारों को गोली मारों सालों को' का नारा लगा रहे थे। यह जगह जिलाधिकारी आवास के करीब है कन्हैया कुमार की गाड़ी पर एक बड़ा पत्थर फेंका गया, जिससे गाड़ी क्षतिग्रस्त हुई। कारवां में शामिल बस का शीशा फूट गया और यात्री मांडवी देवी को हल्की चोट लगी। कारवां में शामिल रथ के ड्राइवर का सिर फट गया।

संघर्ष यात्रा के आयोजकों ने राज्य सरकार से मांग की है कि पत्थर फेंकने वालों को अविलम्ब गिरफ्तार किया जाय और काफिले को सुरक्षा दी जाए। देश के विभिन्न हिस्सों में भाजपा के लोगों द्वारा आन्दोलनकारियों पर इस तरह का हिंसक हमला इस बात का सबूत है कि भाजपा एक हिंसक समूह है और उसे अपने देश के संविधान पर भरोसा नहीं है।

–आशीष रंजन

उन्नाव में गांधी चर्चा

उन्नाव सर्वोदय मण्डल द्वारा उन्नाव शहर से लगभग 54 किमी दूर बाँगरमऊ तहसील के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित पीडीवाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में जन स्वाध्याय अभियान और उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल द्वारा संचालित 'गांधी चर्चा' का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध गांधीवादी राम शंकर जी तथा जन स्वाध्याय अभियान के प्रदेश संयोजक रघुराज सिंह 'मगन', प्रबंधक रमेश कुमार तथा मनीराम गौतम आदि मौजूद रहे। बच्चों ने चर्चा के बाद गांधी ज्ञान परीक्षा में भी सहर्ष भाग लिया।

–रघुराज सिंह 'मगन'

गांधीजी की पुण्यतिथि पर सर्वधर्म प्रार्थना

विगत 30 जनवरी को गांधी शहादत दिवस पर गांधीजी की पुण्य-स्मृति में श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन मुम्बई सर्वोदय मंडल ने किया। गांधी जी की हत्या शाम के 5 बजकर 17 मिनट पर हुई थी। ठीक उसी समय कार्यक्रम में मौजूद सभी ने मौन रहकर बापू को अपनी श्रद्धांजलि दी। मौन के उपरांत कार्यक्रम में उपस्थित सभी ने सामूहिक रूप से साने गुरुजी की प्रार्थना का पाठ किया। श्रद्धांजलि सभा के अंत में जयंत दिवाण ने उपस्थित गांधीजनों को संबोधित भी किया।

सर्व सेवा संघ का अगला अधिवेशन

सर्व सेवा संघ (अखिल भारत सर्वोदय मंडल) का 88वां अधिवेशन **दिनांक 30-31 मार्च 2020 (सोमवार-मंगलवार)** को सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष **श्री महादेव विद्रोही** की अध्यक्षता में **कोट्टयम** (केरल) में होगा।

सर्व सेवा संघ के अगले अध्यक्ष का निर्वाचन दिनांक 31 मार्च 2020 को होगा। इससे संबंधित विस्तृत जानकारी सर्व सेवा संघ की वेबसाइट sarvasevasangh.org से प्राप्त की जा सकती है। लोकसेवकों, सर्व सेवा संघ के सदस्यों की सूची तथा अध्यक्ष के निर्वाचन कार्यक्रम की जानकारी भी वेबसाइट पर प्रकाशित कर दी गयी है। देश के अनेक भागों से कोट्टयम के लिए सीधी गाड़ियां हैं। कुछ गाड़ियां एर्णाकुलम तक जाती हैं या दूसरे रास्ते से तिरुवनंतपुरम जाती हैं। इन गाड़ियों से आने वाले भाई/बहन एर्णाकुलम से गाड़ी बदलें। एर्णाकुलम से कोट्टयम की दूरी करीब 75 कि.मी. है और हर 10-15 मिनट पर बसें मिलती रहती हैं। अधिवेशन स्थल पर निवास की व्यवस्था 29 मार्च 2020 से ही है। कृपया अपने पहुंचने का कार्यक्रम इसी अनुसार बनायें।

अधिवेशन स्थल : मध्य केरल डायोसिस (सीएसआई रिट्रीट), सी एम एस कॉलेज के पास, **कोट्टयम (केरल)**।

यह स्थान कोट्टयम रेलवे स्टेशन से करीब 2.5 कि. मी. तथा केरल परिवहन निगम के बस स्टैन्ड से करीब 3 कि.मी. की दूरी पर है।

गांधी के बलिदान दिवस पर सेवाग्राम में सर्वोदय कार्यकर्ताओं का उपवास-सत्याग्रह

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 73वें बलिदान दिवस पर सेवाग्राम आश्रम में देश के विभिन्न राज्यों से आये सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने उपवास किया तथा संविधान विरोधी नागरिकता संशोधन अधिनियम, एनआरसी और एनपीआर के खिलाफ सत्याग्रह किया. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष महादेव विद्रोही ने कहा कि आज़ादी के पहले से बापू की हत्या के प्रयास होते रहे हैं. 1944 में सेवाग्राम आश्रम में भी उनकी हत्या का प्रयास किया गया. 30 जनवरी 1948 को छठे प्रयास में वे सफल हुए. बापू का नश्वर शरीर भले ही हमारे बीच नहीं हो, पर उनके विचार सदियों तक मानवता का मार्गदर्शन करते रहेंगे. जो लोग समझते है कि गांधी को मार देने से गांधी विचार खत्म हो गया, उनकी यह सोच मूर्खता की पराकाष्ठा है. गांधी को मारा नहीं जा सकता है. दुनिया में जहां भी दमन, शोषण और विषमता है, उन सारी जगहों पर गांधी चट्टान की तरह खड़ा है.

विनाश की ओर बढ़ रही दुनिया गांधी की तरफ आशा की नजरों से देख रही है, वहीं दूसरी ओर भारत में कुछ सांप्रदायिक शक्तियां गांधी के अपमान तथा गांधी के हत्यारे के महिमामंडन में लगी हुई हैं. दक्षिण अफ्रीका में सीएए तथा एनआरसी की तरह का कानून लाया गया था तो महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय समुदाय के लोगों ने उसके खिलाफ सत्याग्रह किया और जेल गए. दुर्भाग्य है कि जिस कानून के खिलाफ गांधी ने सत्याग्रह किया था, उसी कानून को उनके देश में लागू किया जा रहा है.

भारत के संविधान का अनुच्छेद 14 कहता है कि यहां किसी के साथ धर्म, भाषा, लिंग आदि

के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा पर यह सीएए खुलेआम संविधान की इस भावना को रौंद रहा है. हमारे देश में 1959 में परम पावन दलाई लामा के नेतृत्व में लाखों की संख्या में तिब्बत के शरणार्थी आये थे. उसी तरह भारत में नेपाल के लाखों लोग हैं. नये कानून के अनुसार उन सबको नागरिकता नहीं मिलेगी.

आधार कार्ड और मतदाता पहचान पत्र होने के बावजूद इनकी एनआरसी में कोई उपयोगिता नहीं है. विडम्बना तो यह है कि असम में एक ही परिवार के कुछ लोग भारतीय, तो कुछ विदेशी घोषित हो चुके हैं. कुल मिलाकर यह कवायद नोटबंदी की तरह जनता को कतार में खड़ा करने का एक अपराध मात्र है.

सर्व सेवा संघ इसके खिलाफ देश भर में आन्दोलन खड़ा करेगा. सभा को संबोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार तथा मराठी में लिखी पुस्तक 'गांधी का मरत नाही' के लेखक चंद्रकांत वानखेड़े ने कहा कि गांधी के बारे में पहले से ही हिन्दुत्ववादी विचारधारा के लोग बदनामी करते आये हैं. हाल में सत्ता प्राप्ति के बाद इन गतिविधियों में तेज़ी आ रही है और गांधी के हत्यारों का मान-सम्मान किया जा रहा है. राष्ट्रीय एकात्मता में बाधा डालने की हर कोशिश की जा रही है. आज गांधी पुण्य स्मरण के अवसर पर हम कसम खाते हैं कि उस विचारधारा के खिलाफ पुरजोर संघर्ष करते रहेंगे. कार्यक्रम को राष्ट्र सेवा दल के पूर्व अध्यक्ष सुरेश खैरनार, सेवाग्राम आश्रम के पूर्व अध्यक्ष मा.म.गडकरी, नागपुर हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता फ़िरदौस मिर्ज़ा तथा आमिर अली अजानी आदि ने संबोधित किया.

महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष शिवचरण सिंह ठाकुर ने कार्यक्रम में शामिल सभी का सामूहिक धन्यवाद दिया. कार्यक्रम का संचालन अविनाश काकड़े ने किया.

–महादेव विद्रोही

गांधी-150 पर विचार गोष्ठी

जोधपुर में 25 जनवरी को महात्मा गांधी के 150 वें जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में एक विचार गोष्ठी का आयोजन गांधी शांति प्रतिष्ठान के मानद सचिव डॉ. भावेन्द्र शरद जैन के मुख्य आतिथ्य में हुआ। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि "गांधीजी का प्रायोगिक जीवन एवं रचनात्मक कार्यक्रम आज पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक है। गांधीजी अहिंसक सेना के सेनापति थे और उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि हर व्यक्ति उनका अनुसरण करता था। उन्होंने कहा कि खादी ग्रामोद्योग के माध्यम से न केवल लोगों को रोजगार मिलेगा बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी मजबूत होगी। गांधी मशीनीकरण के विरोधी नहीं थे, उनका मानना था कि हर हाथ को काम मिले। उन्होंने महात्मा गांधी कॉर्नर का अवलोकन भी किया। संवाद के दौरान अनेक लोगों ने प्रश्न किये। डॉ. देवीलाल पंवार ने कहा कि आज विश्व में व्याप्त हिंसा एवं सांप्रदायिक माहौल का समाधान गांधी विचार से ही संभव है। डॉ. संतोष छापर ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। अशोक चौधरी ने सर्वधर्म प्रार्थना व मंच संचालन किया। संतोष व्यास ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

–संतोष व्यास

बिहार व झारखंड में बापू की मूर्ति तोड़ी गयी

सीतामढ़ी जिले के नानपुर प्रखण्ड के महुआगाछी बाजार के गांधी चौक पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की मूर्ति तोड़े जाने पर जिला सर्वोदय मंडल की टीम ने घटना-स्थल का जायजा लिया तथा इस घटना की कडी निन्दा की। इस संबंध में जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष डॉ आनन्द किशोर, उपाध्यक्ष जीवनाथ शाफी, नगर अध्यक्ष लालबाबू मिश्र तथा जिला समिति के सदस्य पूर्व प्राचार्य ब्रजमोहन मंडल ने स्थानीय नागरिकों से बात की तथा स्थिति की जानकारी ली। इस क्रम में एक स्थानीय विक्षिप्त लड़के द्वारा घटना को अंजाम देने की बात सामने आई है तथा कुछ लोगों ने लडके को उकसाने की भी बात बताई है। इस संबंध में टीम द्वारा समाहर्ता सीतामढ़ी को आवेदन देकर मामले की जांच कराकर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई के साथ बापू की नई मूर्ति लगाने तथा स्मारक स्थल के जीर्णोद्धार की मांग की गई है। इस संबंध में मुख्यमंत्री बिहार को भी सूचित किया गया है। सर्वोदय मंडल सीतामढ़ी के तत्वावधान में महुआगाछी के नागरिकों के साथ धर्मेन्द्र प्रसाद यादव सरपंच की अध्यक्षता में एक बैठक कर बापू-मूर्ति तथा स्मारक स्थल की जीर्णोद्धार समिति का गठन किया गया। बैठक में कार्रवाई नहीं होने पर सत्याग्रह करने का भी प्रस्ताव पारित किया गया है।

इसी तरह हजारीबाग में भी गांधी प्रतिमा तोड़े जाने की खबर है। इस घटना की जांच हेतु 11 फरवरी को रांची से सामाजिक कार्यकर्ताओं की टीम हजारीबाग गई थी। टीम में मुख्यतः जेपी आंदोलन से जुड़े रहे साथी शामिल थे। रांची से श्रीनिवास एवं हजारीबाग से अधिवक्ता स्वरूप चंद जैन, पूर्व विधायक गौतम सागर राणा, अर्जुन यादव, शमशेर आलम और विश्वनाथ आजाद शामिल थे। मानवाधिकार संगठन एपीसीआर के स्टेट सेक्रेटरी जियाउल्लाह, रांची भी टीम का हिस्सा थे। हजारीबाग से एपीसीआर एवं यूनाइटेड मिल्ली फोरम के सदस्य भी टीम के साथ मौजूद थे। टीम को कुछ ग्रामीणों ने बताया कि बापू की प्रतिमा को तोड़ने की घिनौनी हरकत करने वाले उसी गांव (कूद गांव) में रहने वाले बजरंग दल के सदस्य हैं। पुलिस ने अभी तक एक भी अपराधी को नहीं पकड़ा है। घटना के विरोध में हजारीबाग और रांची में सामाजिक कार्यकर्ता तथा नागरिक उपवास पर बैठेंगे। इस बीच हजारीबाग के उपायुक्त ने सराहनीय पहल करते हुए बापू की नई प्रतिमा के निर्माण हेतु पांच लाख रुपए की राशि स्वीकृत की है। ❑

'Sarvodaya Jagat' Hindi Fortnightly
Registered under RNI No. 35495/78, Postal Registration No. VSI-(E) 04, Valid upto 31 December 2020
Issued by S.S.P.O. Varanasi (East Division)

कविताएं

बापू फिर आओ एक बार

❑ मुनीश्वरलाल चिन्तामणि

बैठे युद्धों के कगार पर
मानव का बल क्षीण हुआ है
आज मानवता
निर्बल, निःस्वर, निस्तेज
अशरण है
जगत की इस बंजर क्यारी में
बेल खुशियों की उगाने आओ
और आकर पीड़ित विश्व को
दो नव शक्ति की ललकार
बापू फिर आओ एक बार।
मानव की दबाई गई
चूसी गई चेतना को
कौन देगा विश्वास यहाँ?
कौन मिटाएगा अशांति
और भय का घोर अंधियारा?
त्राण दिलाने हिंसा से कब आओगे
सत्य अहिंसा के दिनमान!
आओ, नये संसार के रच डालो नये आधार
बापू फिर आओ एक बार।
यहाँ दलित-दुखियों के त्राता कहाँ?
कौन यहाँ पोंछेगा विवश अश्रुकण
असहाय जनों के?
हे युग के नयनों के तारे!
जन जीवन को नव आलोक देने के हेतु
फिर ले लो अवतार
बापू फिर आओ एक बार।
आज विश्व में स्वार्थ, पृथकता
और क्षुद्रता का फैल रहा है अंगार
सत्य की सत्ता मिट रही है,
पीड़ितों की सहायता छिन रही है,
सम्पत्ति की सत्ता के आगे
रौंदा जा रहा है आत्मा का संसार
बापू फिर आओ एक बार।
है यहाँ कोई प्रकाश-पूरित व्यक्तित्व,
जो लोगों में सच्चाई की लौ जगा दे?
जो अपने त्याग से
वसुधैव कुटुम्बकम की भावना
लोगों में भर दे,
चारित्रिक हीनता की नींव हिला दे,
कुण्ठाओं को मार भगा दे,
अनास्था और अश्रद्धा की
कालिमा पोंछ दे?
अब कौन यहाँ पहनाए मानवता के गले में हार
बापू फिर आओ एक बार।
कौन यहाँ निज चिंतन को
कर्म की मथनी से मथ कर
कर पाता है उन्नयन जगत का
अपने पवित्र आचरण द्वारा?
कौन कर पाता है
स्थापना उत्तम आदर्श की?
हे चरितनायक!
इंसानी कारवां के नायक!
फिर कब सुनाई देगी
मानवता के
अमर-आदर्श की वह झंकार
बापू फिर आओ एक बार। ❑

और गांधी ने कहा

❑ पं. दीनदयाल ओझा

1. और गांधी ने कहा
मत बिलो पानी को,
थक जायेगा
पर, माखन नहीं पायेगा।
सब छोड़, उससे नाता जोड़,
जो तू कर सकता है।
और उसे करने की पूर्णता तक
जी-मर सकता है।
कथनी नहीं, करनी कर
और उसी के लिये जी
और उसी के लिये मर।

2. और गांधी ने कहा
कुछ बनना ही चाहता है तो
हिरण्यकश्यप नहीं, प्रह्लाद बन
रावण नहीं, राम बन
कंस नहीं, कृष्ण बन
ययाति नहीं, जनक बन
केवल निन्दा या स्तुति न कर
यूं मत तन।

3. और गांधी ने कहा
यह सच है कि आपने मेरी
मूर्तियां बनवायी
पर, मेरी सत्य-अहिंसा की बात को
न सच्चे मन खुद अपनाई
और न सच्चे मन, जग-जन को सुनाई
बताई, समझाई।
तुम मानों या न मानो,
पर मेरी आत्मा सब कुछ निरख रही है,
सब कुछ परख रही है।
यत्र-तत्र-सर्वत्र।

4. और गांधी ने कहा
मुझे भीड़ नहीं
मात्र, (केवल मात्र)
पांच प्यारे चाहिए,
जो मेरे साथ, मेरे भावानुरूप
जी सके और मर सके
और कुछ न कह,
सब कुछ कह सके।
इस ठौर, उस छोर
कल तक ही नहीं,
जीवे तब तक।

5. और गांधी ने कहा
मैं देख रहा हूं
आज तुम्हारे में
सद् याद रखने का भाव घटा है
और सद् भूल जाने का चलन बढ़ा है
देना तो होगा ही तुझे
इस घटत-बढ़त का हिसाब,
अभी नहीं तो थोड़ी देर बाद
ही सही। ❑

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए प्रकाशक अरविन्द अंजुम द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार।